चीको मेंडेस
जंगल की लड़ाई

चीको मेंडेस

जंगल की लड़ाई

विषय सूची

"मुझे अब यह समझ आया है, कि हमारा संघर्ष सम्पूर्ण मानव जाति के लिए है। "

अध्याय १ : संघर्ष के संकेत

१९८६ की ग्रीष्म ऋतु का अंत समीप था, और कुछ स्त्री-पुरुषों और बच्चों का एक समूह एक विशाल चरागाह के मध्य चला जा रहा था। यह चरागाह ब्राज़ील के अमेज़ॉन वर्षा-वन के बीचो-बीच स्थित एक बहुत बड़े मवेशीखाने का हिस्सा था।

मवेशियों के लिए यह चरागाह बनाने के लिए जंगल के इस हिस्से के सारे पेड़ों को काट कर जला दिया गया था। वन्य जीवन से कभी भरपूर रही इस धरती पर अब केवल सूर्य की किरणों से झुलसी घास की एक हलकी सी परत भर बची थी।

यह नीरस चरागाह अपने आस-पास के घने जंगलों से बिलकुल भिन्न था। इन वर्षा-वनों को सदियों की धूप और वर्षा ने पोषित करके इतना गहन और घना बना दिया था, कि वहां दिन में भी अँधेरा सा प्रतीत होता था। वहां की हवा पक्षियों के लगातार चहचहाने और पत्तियों में छिपे कीट-पतंगों की मधुर आवाज़ों से गूंजती रहती थी। घने पेड़-पौधों का एक गहन हरा शामियाना जैसे किसी छतरी की तरह जंगल की धरती की रक्षा कर रहा हो। घने वृक्षों के इस शामियाने को दक्षिण अमेरिका के चिलचिलाते सूर्य की तीव्र किरणें भी नहीं भेद पाती थीं।

पैदल जाते उस समूह की तेज़ धूप से रक्षा के लिए आस-पास एक भी पेड़-पौधा न था। न ही वहां कोई पक्षी या कीट-पतंग थे, जो अपनी मधुर आवाज़ों के संगीत से उनका मनोरंजन करते। अगर कोई आवाज़ थी तो केवल इस तहस-नहस हुई धरती पर चलते उन लोगों के पदचापों की धीमी आवाज़।

इस समूह का अगुवा था, कुछ मोटी तोंद और गठीले बदन वाला एक छोटे कद का व्यक्ति, जिसके घने काले बाल हवा में उड़ रहे थे और उसके चेहरे पर एक दोस्ताना मुस्कान थी। उसके बालों की लटें उसके गर्दन के आस-पास झूल रही थीं, और उसके माथे को ढक रही थीं। उसकी बड़ी-बड़ी गहरी भूरी आँखों में उसका शांत और निश्चल व्यक्तित्व साफ़ झलकता था। जब वह मुस्कुराता, उसकी आंखों के नीचे सलवटें पड़ जातीं। चीको मेंडेस अक्सर ही मुस्कुराता था, और जब वह ऐसा करता, उसकी घनी मूँछें और उसके होठों के किनारे ऊपर को उठ जाते।
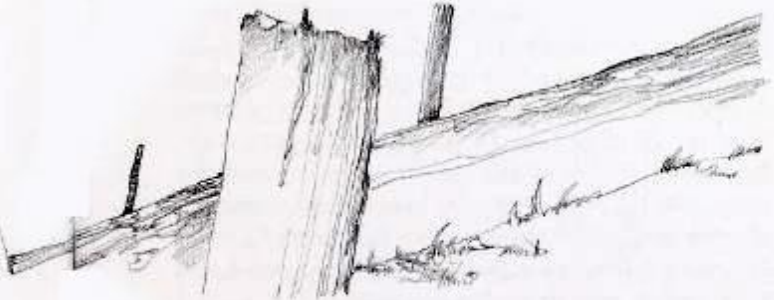
उस समूह के और लोगों की भांति ही मेंडेस भी ज़िन्दगी भर पेड़ों से रबर निकालने का काम करता रहा था। रबर के पेड़ को काटने पर उसकी छाल से जो दूध निकलता है, उसे इकठ्ठा करना ही इन सब का दिन भर का काम था। यह दूध, जिसे लेटेक्स कहा जाता है, रोज़मर्रा के इस्तेमाल की बहुत सी चीज़ें बनाने के काम आता है, जैसे कि टायर, खेल का सामान, खिलाडियों के जूते, और रबर से बना अन्य सामान।

इन रबर इकठ्ठा करने वालों की जीविका जंगल से मिलने वाले इसी पदार्थ को बेच कर चलती थी। वे रबर के पेड़ों या जंगलों को बिना कोई हानि पहुंचाए पेड़ से लेटेक्स निकाल लेते थे। इस प्रकार धरती को बिना हानि पहुंचाए उससे कोई उपयोगी पदार्थ ले लेने का ही नाम है चिरस्थायी खेती (Sustainable Agriculture)।

लेकिन अमेज़ॉन के वर्षा-वनों में हर कोई इस प्रकार की चिर-स्थायी खेती का पालन नहीं कर रहा था। बहुत से लोग ऐसे भी थे जो इन वर्षा-वनों को नष्ट करके धन कमा रहे थे।

पशु-पालन और खेती-बाड़ी करने वाले लोग हर साल हज़ारों एकड़ वनों को काट डालते थे। इस प्रक्रिया को निर्वनीकरण (Deforestation) कहा जाता है। वे वनों को काट कर मिली जमीन का इस्तेमाल फसलें उगाने या मवेशी चराने के लिए करते। निर्माण कार्य में लिप्त कम्पनियाँ नई सड़कें बनाने के लिए वनों के बड़े हिस्से को काट डालती थीं। इमारती लकड़ी के व्यवसायी सैकड़ों सालों से बढ़ रहे मज़बूत लकड़ी वाले पेड़ों को रोज़ाना काट गिराते। वर्षा-वन में बहने वाली अनेक नदियां अब खदानों में इस्तेमाल होने वाले रसायनों के कारण प्रदूषित हो चुकी थीं।

वर्षा-वन को बड़ी भयावह तेज़ी से नष्ट किया जा रहा था। जैसे जैसे वन को काटा, जलाया और प्रदूषित किया जा रहा था, इस वन की हरियाली में प्रचुर संख्या में बसने वाले वन्य जीवों का भी विनाश हो रहा था। वन के पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, कीट-पतंग और फल-फूल, ये सभी अपने-अपने अस्तित्व के लिए एक दूसरे पर, और पर्यावरण पर निर्भर होते हैं।

वर्षा-वन में रहने वाले पशु-पक्षियों और पेड़-पौधों में आपसी रिश्तों का एक ताना-बाना सा बन जाता है। जीवों और उनके पर्यावरण के बीच रिश्तों के इस ताने-बाने को पारितंत्र या इकोसिस्टम (Ecosystem) का नाम दिया गया है। वर्षा-वन बहुत विशाल होते हुए भी इसका इकोसिस्टम बहुत नाज़ुक होता है। जब भी वन के किसी हिस्से को काटा जाता है, पेड़-पौधों व पशु-पक्षियों की सैकड़ों, या शायद हज़ारों प्रजातियां नष्ट हो जाती हैं।

यह विनाश केवल वन्य-जीवन के लिए ही खतरा नहीं है। इससे रबर इकठ्ठा करने वालों की रोज़ी-रोटी भी खतरे में आ जाती है। इतना ही नहीं, जैसा कि चीको मेंडेस को अमेज़ॉन को बचाने के अपने अभियान के दौरान समझ आया, वर्षा-वनों का विनाश पूरी धरती के पर्यावरण के लिए खतरा पैदा करता है।

लेकिन १९८६ के उस धूप से तपते दिन जो लोग चीको मेंडेस के साथ चले जा रहे थे, उनकी चिंता का मुख्य विषय पृथ्वी के भविष्य को लेकर नहीं था। उनमें से अधिकांश को अपनी जीविका चलाने का एकमात्र उपाय खतरे में पड़ता नज़र आ रहा था। चीको मेंडेस अपने साथियों को कटे हुए जंगल से दूर ले जा रहा था। वे जिस रास्ते पर चल रहे थे वह घने जंगलों की ओर जा रहा था।

जैसे ही वे जंगल में घुसे, सूर्य की चिलचिलाती धूप पीछे रह गई। अचानक चारों ओर धुंधलके की एक चादर सी बिछ गई। जैसे ये लोग आगे बढ़ने लगे, उन्होंने गाना शुरू कर दिया। उनके आवाज़ें ऊपर उठतीं, और जैसे घने पेड़ों की हरियाली में ग़ुम हो जातीं। रास्ते में उन्हें दूसरे रबर इकट्ठा करने वालों के घर मिले, जो कि पेड़ के तनों और घास से बनाये गए थे। वे घंटों तक चलते रहे।

गहरे जंगल में पहुँच कर उन्हें एक चिंतित करने वाली आवाज़ सुनाई दी। यह आवाज़ जंजीर से चलने वाली आरियों (Chain Saw) की थी। नज़दीक ही कोई इस आरी की मदद से पेड़ों को काट रहा था। मेंडेस अपने इस जत्थे को यहाँ इसलिए लेकर आया था, जिससे वह जंगल के इस हिस्से को नष्ट कर रहे इन लोगों को रोक सके। इस प्रकार के शांतिपूर्ण विरोध का नाम था "इम्पाते" (Empate)।

चीको मेंडेस ने सबको इकट्ठा करके उन्हें समझाया कि अब क्या करना है। "मुझे विश्वास है ये मुट्ठी भर लोग ही हैं," मेंडेस ने कहा, "और वे हमारा प्रतिकार नहीं करेंगे। लेकिन हमें उनको यह जताना होगा कि हमारे इरादे शांतिपूर्ण हैं। आप लोग कोई भी आक्रामक बात न कहें, और ध्यान रखें कि वे लोग बिलकुल भयभीत महसूस न करें।"

मेंडेस द्वारा वर्षा-वनों के संरक्षण के लिए आयोजित किये गए अनेक सत्याग्रह इसी प्रकार के थे। इस जद्दो-जहद की अगुआई मेंडेस केवल अपने प्रदेश आक्रे (Acre) में ही नहीं, बल्कि पूरे अमेज़ोनिया (Amazonia) में कर रहा था। वर्षा-वनों वाले ब्राज़ील के पश्चिमोत्तर भाग को अमेज़ोनिया कहा जाता है।

यद्यपि अमेज़ॉन को बचाने के लिए मेंडेस किसी भी प्रकार की हिंसा के विरुद्ध था, लेकिन जिनका वह विरोध कर रहा था, वे लोग शांतिप्रिय नहीं थे। दिसंबर १९८८ में उन लोगों में चीको मेंडेस की हत्या कर दी। एक ऐसा सज्जन व्यक्ति जो सदा अपने अनुयायियों को अहिंसक मार्ग अपनाने के लिए प्रेरित करता था, उसे इसलिए मार डाला गया, क्योंकि वह जंगलों को बचाने का प्रयत्न कर रहा था।

चीको मेंडेस की मृत्यु के समय तक उसका यह संघर्ष दक्षिण अमेरिका के वर्षा-वनों से बहुत आगे आ पहुंचा था। उसके प्रयत्नों के कारण, वन-संरक्षण के इस अभियान से वे सभी लोग जुड़ गए थे, जिन्हें पर्यावरण की चिंता थी।

"हमने यह संघर्ष रबर के पेड़ों और जंगल की अपनी जीवन-शैली को बचाने के लिए शुरू किया था." उसने कहा। "फिर हमें समझ आया कि हम इसके द्वारा पूरे अमेज़ोनिया की रक्षा कर रहे थे।"

"लेकिन अब मैं अनुभव करता हूँ कि हम पूरी मानव-जाति के लिए संघर्ष कर रहे हैं," चीको मेंडेस ने कहा।

अध्याय २: अमेज़ॉन का वर्षा-वन

कल्पना कीजिये एक इतने बड़े जंगल की, जो मेन (Maine) से फ्लोरिडा, न्यू मेक्सिको और मोन्टाना (Montana) तक फैला हो, और बीच के सभी राज्यों को अपने में समाये हुए। इतना बड़ा है अमेज़ॉन का वर्षा-वन, यानि २४ लाख वर्ग मील से भी अधिक।

आकाश से देखने पर यह वर्षा-वन एक अनंत तक फैले हुए हरे कालीन जैसा दिखाई देता है। असल में अमेज़ॉन का यह जंगल अकल्पनीय जैविक विविधता से भरा हुआ है। यहाँ का तापमान सदा ही अधिक रहता है, नमी भी बहुत ज़्यादा, और वर्षा भी अत्याधिक। इसके कारण यहाँ एक ऐसा पर्यावरण निर्मित हुआ है, जिसमें वृक्षों और जंतुओं की हज़ारों प्रजातियां खूब पनपी और फली-फूली हैं।

अमेज़ॉन वर्षा-वन के गर्मी और नमी से भरे वातावरण में वृक्षों की पचास हज़ार से भी अधिक प्रजातियां मौजूद हैं। अमेज़ॉन नदी और उसकी सहायक नदियों में तीन हज़ार से भी अधिक प्रकार की मछलियां पाई जाती हैं। इस जंगल में मात्र दो एकड़ के छोटे से क्षेत्र में भी वैज्ञानिकों को पेड़ों की २३० से अधिक प्रजातियां मिलीं। दस वर्ग फुट के एक क्षेत्र में, सड़ती हुई पत्तियों के नीचे, उन्हें ५० अलग-अलग प्रकार की चींटियां मिलीं। एक अकेला पेड़ ४०० से अधिक कीट-पतंगों को शरण देता है।

इस वर्षा वन में बनफ्शे के ३० फ़ीट से भी ऊंचे पेड़, और सात फुट से भी चौड़े कमल के फूल पाए गए हैं। आठ इंच लम्बे पंखों वाली चमकदार नीले रंग की तितलियाँ यहाँ फड़फड़ाती हैं, और किसी बच्चे की मुट्ठी के जितने बड़े झींगुरों के साथ साँपों सी दिखने वाली इल्लियां यहाँ की धरती पर रेंगती दिखाई देती हैं। यहाँ की पिरारुकु नाम की मछलियां बढ़ कर सात फुट तक लम्बी हो जाती हैं।

इनमें बहुत से पेड़-पौधे और जंतु ऐसे हैं, जो विश्व में और कहीं नहीं पाए जाते। ये प्रजातियां जीवित रहने के लिए अमेज़न वर्षा-वन के विशिष्ट पर्यावरण पर निर्भर हैं।

भूमध्य रेखा के निकट होने के कारण इस वर्षा वन को प्रतिदिन पूरे १२ घंटे की तेज़ और सीधी धूप मिलती है। यहाँ प्रतिदिन लगभग ८६ डिग्री फ़ारेनहाइट का तापमान रहता है, और हवा हमेशा ही अत्यधिक नम रहती है। रोज़ दोपहर को तेज़ वर्षा होती है, साल भर में १०० इंच से भी अधिक।

इस तेज़ धूप, गर्मी, नमी और वर्षा ने ही जन्म दिया है इस सघन हरियाली से भरपूर अमेज़ॉन के वर्षा-वन को। ऊँचाई से दिखने वाला हरियाली का यह कालीन असल में विशालकाय और लम्बे पेड़ों, और उन पर चढ़ी सघन बेलों के शिखरों से बना है। अधिकाधिक सूर्य की रोशनी पाने के लिए उनकी चौड़ी पत्तियों और मोटी-मोटी शाखाओं का बढ़ाव ऊपर की ओर होता चला जाता है, जिससे वर्षा-वन की यह ऊपरी सतह तैयार होती है, जिसे छतरी या शामियाना (Canopy) का नाम दिया गया है। जिन पेड़-पौधों से यह छतरी बनी है, वे १०० से १३० फुट तक ऊंचे होते हैं।

थोड़ा नज़दीक से देखने पर यह छतरी एक समतल हरा कालीन नहीं, बल्कि उभारों से भरे किसी घास के मैदान जैसी नज़र आती है। ये उभार वे पेड़ हैं जो बढ़ कर छतरी से कुछ और ऊँचे हो गए हैं। इन पेड़ों को उद्गामी या इमर्जेंट (Emergents) कहा जाता है, क्योंकि वे छतरी से ऊपर निकल आये हैं। वे जंगल के धरातल से १६० फ़ीट से भी अधिक ऊँचाई तक बढ़ जाते हैं।

अमेज़न के वर्षा-वन के अधिकांश जीव-जंतु, और उसका रंग-रूप इस छतरी में ही होते हैं। यह छतरी इस वन के अनेक जीवों और पौधों को घर प्रदान करती है।

छतरी की ऊपरी सतह पर चमकीले फूल हवा को सुगन्धित करते हैं। इन फूलों का मधुर पराग असंख्य तितलियों, मधुमक्खियों, पक्षियों और चमगादड़ों को आकर्षित करता है। एक से दूसरे फूल पर मंडराते ये वन के जीव इन पौधों के पराग को फैला कर उनके संवर्धन में सहायक होते हैं। परागण की इस प्रक्रिया से कुछ फूलों में फल निकलते हैं, जो यहाँ के बंदरों, तोतों और जंगल के दूसरे जीवों को भोजन प्रदान करते हैं। बदले में ये जंतु इन पौधों के बीजों को जंगल की मिट्टी में फ़ैलाने में सहायक होते हैं, जिससे और नए पौधे उगते हैं।
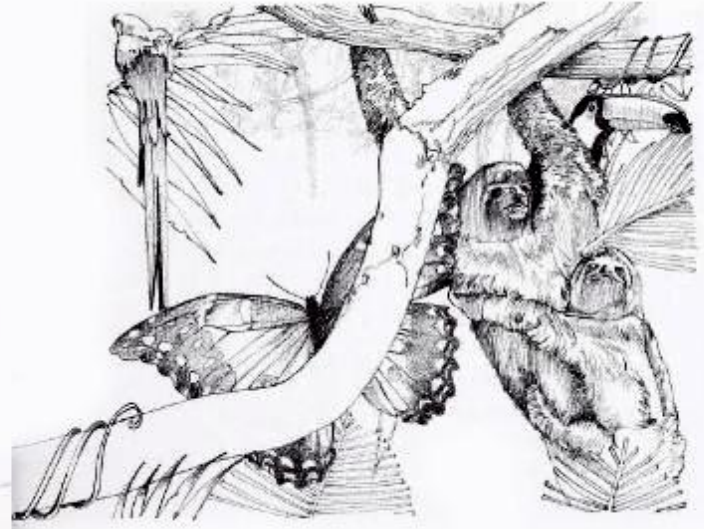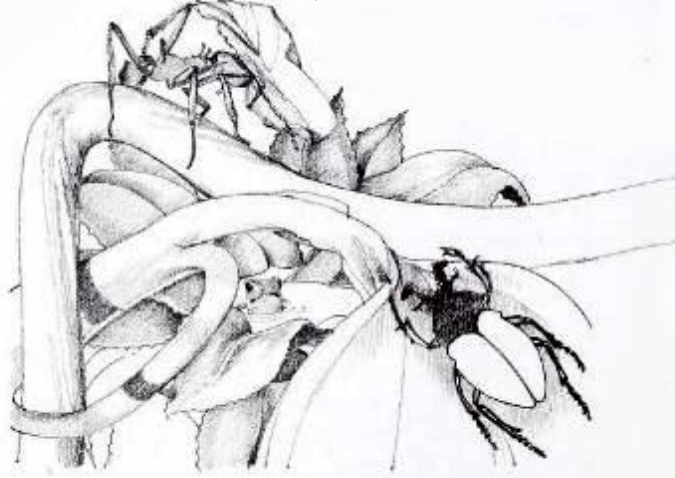
छतरी में चारों ओर चमकीले रंगों वाले, अनानास की प्रजाति के, अन्य प्रकार के हवाई पौधे पाए हैं। ये हवाई पौधे अपनी जड़ें दूसरे पेड़ों और बेलों के तनों पर जमा लेते हैं, और भोजन व पानी की अपनी अधिकांश आवश्यकता हवा से ही प्राप्त कर लेते हैं। इन हवाई पौधों के फूल कटोरी के आकार के होते हैं, जिनमे पानी भर जाता है, और मेंढक व कीट-पतंग अक्सर इनमें अपना घर बना लेते हैं।

छतरी के नीचे, जमीन से करीब ५० से ८० फ़ीट ऊपर, वनस्पतियों का एक दूसरा तल है, जिसे छतरी का निचला तल (Understory) कहा जाता है। यह निचला तल घनी झाड़ियों और लकड़ी जैसे मोटे तने वाली बेलों (Lianas) का एक ताना-बाना है, जिसमें अनेक नन्हे पौधे और झाड़ियां जन्म लेती रहती हैं। सूर्य की छुट-पुट धूप को पाने की स्पर्धा में ये पौधे भी बढ़ कर ऊपरी छतरी के तल तक पहुँच जाते हैं।

वर्षा-वन की सबसे निचली परत जंगल की धरती पर होती है, जहाँ सड़ती पत्तियों और विघटित होते पेड़ों के तनों का एक स्पंज जैसा कालीन सा बिछा होता है। सूर्य का सीधा प्रकाश मुश्किल से ही यहाँ तक पहुँच पाता है। यहाँ कोई हरी वनस्पति देखने को नहीं मिलती, सिवाय कुछ इक्का-दुक्का नन्हे पौधों के।

कभी कभी जब कोई विशालकाय वृक्ष गिर जाता है, तो छतरी के बीच से सूर्य की कुछ रौशनी नीचे तक पहुँचती है। जब तलहटी के नन्हे पौधों पर यह रौशनी पड़ती है, तो वे और अधिक प्रकाश पाने को तेज़ी से बढ़ कर छतरी में हुए इस छेद को फिर से बंद कर देते हैं।
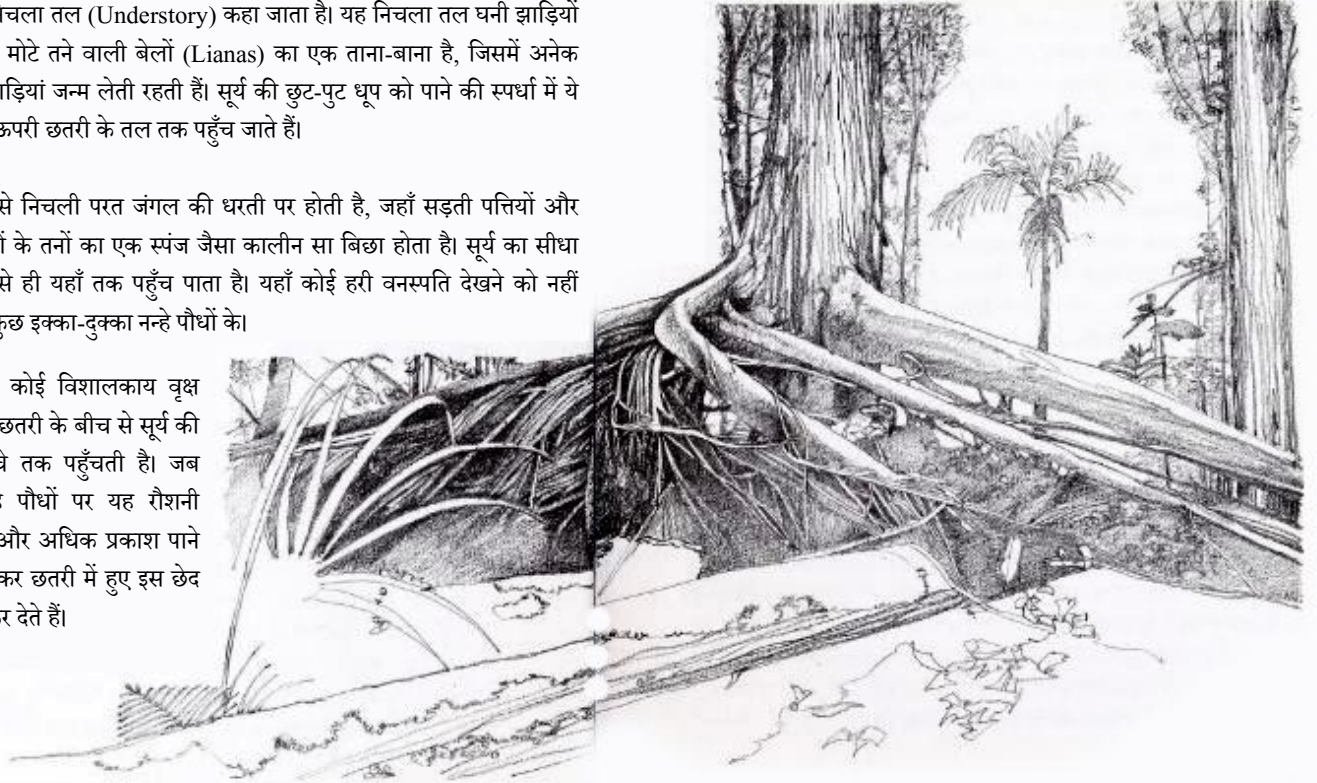
अचम्भे की बात यह है की वर्षा-वन की मिट्टी की परत काफ़ी छिछली और अनुपजाऊ होती है। सदियों की तेज़ वर्षा से मिटटी के उपजाऊ तत्व धुल कर बह चुके होते हैं। इसलिए यहाँ के पेड़-पौधों ने भी बहुत छिछली जड़ें विकसित कर ली हैं, जो कि मिटटी की इस पतली परत को बांधे रखती हैं, जिससे वह वर्षा के साथ बह न जाए।

वर्षा-वन के इकोसिस्टम में प्रत्येक पौधे व जीव-जंतु की अपनी भूमिका है, और यहाँ कुछ भी बेकार नहीं जाता। कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे वर्षा-वन पुनर्चक्रण (Recycling) का एक बहुत बड़ा कारखाना है। हर पोषक तत्व और वर्षा की एक-एक बूँद का, इसमें रहने वाले जीवों और पौधों के भले के लिए, बार-बार उपयोग होता रहता है।

वर्षा-वन के पौधे जब मरते हैं, तो वहां की गर्मी और नमी के कारण वे तुरंत ही सड़ने लगते हैं। वहां की मिट्टी इनके सड़ने से निकलने वाले पोषक तत्वों को जल्दी ही सोख लेते है, और फिर ये दूसरे पौधों के काम आते हैं।

वहां गिरने वाली अधिकांश वर्षा का भी यह वन पुनर्चक्रण करता है। छतरी की बड़ी-बड़ी पत्तियां, और उससे निचले तल की शाखाएं वर्षा के पानी के भूतल तक पहुँचने की गति को बहुत धीमा कर देती हैं। यहाँ तक कि तेज़ वर्षा में भी वर्षा की पहली बूँद को भूतल तक पहुँचते-पहुँचते १० मिनट तक का समय लग जाता है। अत्यधिक गर्मी और धूप के कारण वर्षा का ८० प्रतिशत तक पानी वाष्पीकृत होकर पुनः हवा में मिल जाता है। इस वाष्पीकरण से घने बादल बनते हैं, जो वर्षा-वन पर फिर से बरसते हैं।

वर्षा-वनों का इकोसिस्टम पूरी धरती की जलवायु को प्रभावित करता है। इनसे बने घने बादल आस-पास के खेतों पर बरसते हैं। इस वर्षा से धरती के वायुमंडल के तापमान में कमी आती है। इसके अलावा, वर्षा-वन के पेड़-पौधे बहुत बड़ी मात्रा में वायु-मंडल से कार्बन डाइऑक्साइड गैस को सोखते हैं। इसके साथ ही वे प्राण-वायु आक्सीजन को छोड़ते हैं। हवा से कार्बन डाइऑक्साइड निकल जाने से भी पृथ्वी के तापमान में कमी आती है।

वर्षा-वन में पाई जाने वाली वनस्पतियों और जीव-जंतुओं की विविधता के अन्य भी बहुत लाभ हैं। वर्षा-वन के बहुत से पौधों का प्रयोग भोजन व दवाओं के लिए होता है। यहाँ और भी बहुत से उपयोगी पौधे हो सकते हैं, जिनकी हमें अभी जानकारी नहीं है। वैज्ञानिकों का मानना है, कि वर्षा-वन के पौधों की आधे से भी अधिक प्रजातियों का खोजा जाना अभी बाकी है।

इतना अधिक विशाल होने के बावजूद वर्षा-वन का इकोसिस्टम बहुत ही नाज़ुक होता है। यद्यपि इस वन में जीवों और पौधों की हज़ारों प्रजातियाँ हैं, इनमें बहुत सी प्रजातियां ऐसी हैं जो केवल एक एकड़ या उससे भी छोटे क्षेत्र में सीमित हैं। यदि वर्षा-वन का छोटा सा भाग भी नष्ट होता है, तो अनेक पौधों और जीवों के विलुप्त होने का खतरा है।

जब वनों को काटा जाता है तो वृक्षों और पौधों की जड़ें मिट्टी की छिछली परत को बांधे नहीं रख सकतीं। तेज़ वर्षा से कट कर मिट्टी बह जाती है, और केवल खाली और निष्प्राण पथरीली ज़मीन ही पीछे रह जाती है।
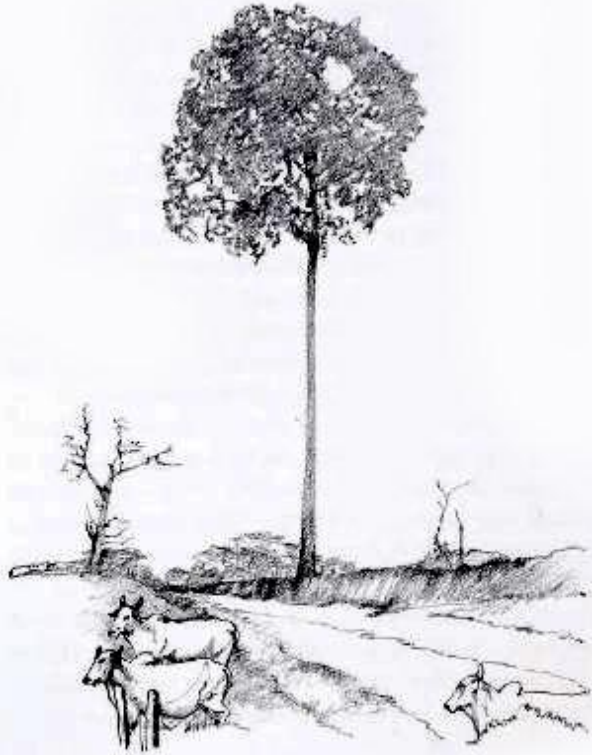
जंगल और मिटटी के विलुप्त हो जाने पर बरसात के मौसम में बरसने वाले पानी को सोखने के लिए कुछ नहीं बचता, और वर्षा ऋतु में आने वाली बाढ़ जल्दी ही वर्षा-वन के सदियों पुराने पर्यावरण को नष्ट कर डालती है। इसके अलावा, हज़ारों एकड़ जंगलों को जला डालने से भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड वातावरण में पहुँचती है। कार्बन डाइऑक्साइड का यह उत्सर्जन पृथ्वी के तापमान को बढ़ाने में सहायक होता है, जिसको ग्लोबल वार्मिंग (Global Warming) या ग्रीनहाउस इफ़ेक्ट (Greenhouse Effect) का नाम दिया गया है।

वर्षा-वनों के विनाश से कितने भोजन या औषधि के लिए बहुमूल्य पौधे विलुप्त हो रहे हैं, वैज्ञानिकों के लिए इसका अनुमान भी लगा पाना कठिन है।

वर्षा-वनों का यह नाज़ुक इकोसिस्टम करोड़ों वर्षों में विकसित हुआ है। यदि इन्हें अकेला छोड़ दिया जाये तो ये वर्षा-वन फलते-फूलते रहेंगे। लेकिन पिछले ४०० वर्षों से इन्हें अकेला नहीं छोड़ा गया है।

आज इनका इकोसिस्टम खतरे में है। इसे सबसे अधिक खतरा ब्राज़ील में है, जो दक्षिण अमेरिका का सबसे बड़ा देश है, और चीको मेंडेस का घर भी।

अध्याय ३:

रबर इकट्ठा करने वाले (टैपर) लोगों का इतिहास

दस हज़ार वर्षों तक ब्राज़ील में केवल रेड इंडियन लोग ही रहते थे। लगभग ५० लाख रेड इंडियन इस पूरे क्षेत्र में फैले हुए थे। जंगलों के ये कबीले अपनी धरती के साथ सामंजस्य से रहते थे। वे शिकार करते, मछलियां पकड़ते, और जंगलों से फल व मेवे इकट्ठा करते। वर्षा-वन की अनुपजाऊ मिट्टी में खेती करने के उपाय भी उन्होंने खोज निकाले। ये रेड इंडियन जंगल के ही इकोसिस्टम का हिस्सा बन गए थे।

१५०० ईस्वी में पुर्तगाल से खोज अभियान पर निकले लोग दक्षिण अमेरिका पहुंचे, और ब्राज़ील पर पुर्तगाल ने कब्ज़ा कर लिया। पुर्तगाल से आकर यहाँ बसने वाले लोग अपनी भाषा, रीति-रिवाज़ और मान्यताएं अपने साथ लेकर आये। १६९० के दशक में ब्राज़ील में श्वेत लोगों की जनसँख्या तब और तेज़ी से बढ़ी, जब हज़ारों की संख्या में पुर्तगाल के लोग सोना खोजने की आशा में देश के अंदरूनी क्षेत्रों की ओर चले गए।

फिर इन पुर्तगाली लोगों को समझ आया कि स्वर्ण की अपेक्षा इस वन में और भी बहुत से ख़ज़ाने छिपे थे, जिन्हें पा लेना बहुत आसान था। ये ख़ज़ाने थे ब्राज़ील नट, कोको और दालचीनी। इन चीज़ों की पैदावार के लिए बड़े-बड़े बगीचे बनाये गए, और यहाँ के मूल निवासी रेड इंडियन लोगों को विदेशी आकाओं के गुलामों की तरह काम करने के लिए बाध्य किया गया।

विदेशी आगंतुक अपने साथ जो बीमारियां लेकर आये, उनसे बड़ी संख्या में रेड इंडियन लोग मारे गए। इसके अलावा, गुलामी के कठोर जीवन ने भी बहुतों के प्राण लिए।

हालाँकि पुर्तगाली और रेड इंडियन लोगों के बीच कठोर शत्रुता थी, लेकिन पुर्तगालियों ने रेड इंडियनों के रहन-सहन को देख कर काफी हद तक जंगल की समझ हासिल की। उन्होंने मछली पकड़ना और भोजन के लिए शिकार करना सीखा। उन्होंने यह भी सीखा कि कौन से पेड़-पौधे फल और मेवे प्रदान करते हैं, और कौन सी जड़ी-बूटियां घावों को ठीक करने, और रोगों के उपचार में लाभप्रद हैं। उन्होंने रबर के पेड़ों से दूध इकट्ठा करना और उससे जलरोधी वस्तुएं बनाना भी सीखा।

रेड इंडियन लोगों ने पुर्तगालियों को यह भी सिखाया कि वर्षा-वन की मिट्टी को हानि पहुंचाए बिना खेती कैसे की जाए। ब्राज़ील की मूल जन-जातियां इस तरह सदियों से खेती करती रही थीं। वे सबसे पहले जंगल के एक छोटे से क्षेत्र को साफ़ करते, और यह सुनिश्चित करते कि जंगल को कम से कम हानि पहुंचे। फिर वे कटे हुए पेड़-पौधों को जला देते जिससे पौधों के पोषक तत्व वापस मिट्टी में मिल जाएँ।

इस उपजाऊ मिट्टी में दो या तीन साल तक खेती की जाती थी। लेकिन इससे पहले कि मिट्टी के पोषक तत्व समाप्त हो जाएँ, इस क्षेत्र को छोड़ दिया जाता था। फिर जब आसपास के जंगल के पेड़ों के बीज यहाँ गिरते, नए पौधे और लताएं उग आतीं और जंगल फिर से वापस आ जाता। इस प्रकार फिर से जंगल बसाने की प्रक्रिया को पुनर्वनीकरण कहा जाता है।

जैसे-जैसे विदेशों में नए रबर उत्पादों की मांग बढ़ी, व्यापारी और सौदागर वर्षा-वनों में अपनी पैठ बढ़ाने लगे। रेड इंडियनों को रबर की आपूर्ति करने के लिए मजबूर किया जाने लगा। फिर १८०० के दशक के अंत, और १९०० की शुरुआत में कारों की बढ़ती लोकप्रियता ने रबड़ के टायरों की जबरदस्त मांग पैदा कर दी। रबर के उद्योग में अत्यधिक तेजी आयी। अमेज़ॉन के जंगलों की गहराई में रबड़ के व्यापारियों ने विशाल साम्राज्य (Estates) स्थापित कर लिए, जिन्हें सेरिंगाइस (Seringais) कहा जाता था। इनके प्रबंधन के लिए सेरिंगालिस्तास (Seringalistas) कहे जाने वाले प्रबंधकों को नियुक्त किया गया।
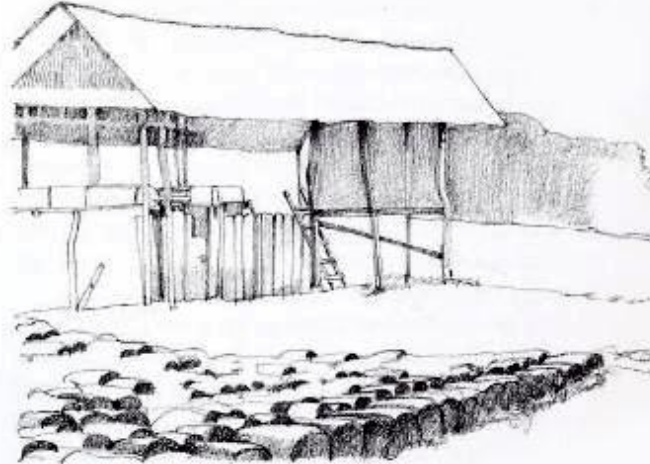
क्योंकि वर्षा वन में कोई सड़कें नहीं थीं, ये रबर एस्टेट, या सेरिंगल, आमतौर पर किसी नदी के पास बनाये जाते थे। रबर को नावों द्वारा बड़े शहरों के बाज़ारों में भेजा जाता था।

रबर की बढ़ती हुई मांग तो पूरा करने के लिए सेरिन्गाई के मालिक ब्राज़ील के पूर्वी क्षेत्रों से ग़रीब मज़दूरों को अमेज़ॉन ले कर आते। सेरिन्गुइरोस (Seringueiros) कहे जाने वाले ये टैपर काम की खोज में जंगल को आते, लेकिन रेड इंडियनों की ही भांति एक अन्यायपूर्ण व्यवस्था के गुलाम बन जाते।

टैपरों को अपनी ज़रूरत का सामान एस्टेट मालिकों से ही खरीदनाहोता था, और उन्हें इन मालिकों से ही घर भी किराए पर लेने कोमजबूर किया जाता था। इस प्रकार ये रबर टैपर काम शुरू करने से पहले ही कर्ज़े में दब जाते थे। जब तक उनके ऋण का भुगतान नहीं हो जाता, उन्हें सेरिंगाइस को छोड़ने की अनुमति नहीं मिलती थी। लेकिन उन्हें अपना रबर मालिकों को ही बेचना पड़ता था, जो अक्सर उन्हें धोखा देते थे। इतनी मेहनत करने के बाद भी, भोजन, किराए और अन्य ज़रूरतों का पैसा चुकाने के बाद उनके पास शायद ही कुछ बच पाता था।

१९२५ में जब चीको के दादा-दादी आक्रे पहुंचे, तब वहां ऐसी ही परिस्थिति थी। औरों की ही तरह जोस और मारिया अल्वेस मेंडेस भी एक बेहतर ज़िन्दगी की खोज में वहां पहुंचे थे।

उनकी यह खोज उन्हें अमेज़ॉन नदी में २००० मील तक ले गई, लेकिन जो ज़िन्दगी वे पीछे छोड़ कर आये थे, उसके मुकाबले यहाँ की ज़िन्दगी किसी भी तरह बेहतर नहीं थी। जोस एक रबर टैपर बन गया। उनका परिवार सांता फे नाम के एक सेरिंगल में बस गया, जहाँ जोस ने अगले २० साल तक काम किया।
जब वे आक्रे आये, जोस का बड़ा बेटा, फ्रांसिस्को १२ वर्ष का था। वह भी अपने पिता के साथ टैपर बन गया। फ्रांसिस्को दुबला-पतला और गठे बदन का था, और उसका रंग सांवला और आँखे काली थीं, जैसी कि उत्तर-पूर्वी ब्राज़ील से आक्रे आने वाले अधिकांश लोगों की होती थीं। वह जन्मजात एक पैर से विकलांग है, और लंगड़ा कर चलता था। क्योंकि रबर टैपर को दिन भर में मीलों चलना पड़ता है, फ्रांसिस्को को यह काम करने में काफ़ी मुश्किलें आ रही थीं। फिर भी उसने कभी कोई शिकायत नहीं की, और मेहनत से अपना काम करता रहा।

फ्रांसिस्को एक गंभीर व्यक्ति था। हालाँकि जंगल में किताबों की उपलब्धिता बहुत सीमित थी, फिर भी उसने किसी तरह पढ़ना सीखा। चीको के पिता को राजनीतिक चर्चा और वाद-विवाद में रूचि थी, और उस ऋण प्रणाली के खिलाफ अपनी घृणा व्यक्त करने में उसे कोई संकोच नहीं था, जिसने रबर टैपर लोगों को गुलाम बना रखा था।

१९४० के दशक के आरम्भ में फ्रांसिस्को ने इरासी लोपेज़ नाम की महिला से विवाह कर लिया। इरासी लम्बे कद की थी, और सुन्दर बालों व चमकदार नीली आँखों की धनी थी। १५ दिसंबर १९४४ को इरासी ने अपनी पहली संतान, एक पुत्र, को जन्म दिया। उसका नाम रखा गया फ्रांसिस्को अल्वेस मेंडेस फ़िल्हो, लेकिन उसके माता-पिता उसे चीको कह कर पुकारते थे।

अपने सात भाई-बहनों में सबसे बड़े चीको का पालन पोषण जंगल में बसे सापुरी नगर के समीप सेरिंगल कचोईरा (Seringal Cachoeira) में हुआ। उनका परिवार रबर एकत्र करने वाले क्षेत्र यानि कोलोककाओ (Colocacao) में रहता था। इस कोलोककाओ का नाम था बोम फ्यूचुरो, जिसका पुर्तगाली भाषा में मतलब था सुन्दर भविष्य। वे अन्य रबर टैपरों की भांति ही एक स्वावलम्बी जीवन शैली का निर्वाह करते थे। आज भी टैपरों का जीवन स्तर लगभग वैसा ही है।

मेंडेस परिवार लगभग ७०० एकड़ क्षेत्र में रबर इकठ्ठा करता था। उनके इस कोलोककाओ के बीचोबीच उनका घर और उसके आसपास कुछ खुला इलाका था। घर के चारों ओर कई घुमावदार पगडंडियां थीं जो रबर के पेड़ों की ओर जाती थीं।

उनका घर, जिसे टापीरी (Tapiri) कहा जाता था, एक छोटी आयताकार इमारत थी। एक-मंज़िले इस मकान को ज़मीन से तीन फुट की ऊंचाई पर बनाया गया था, जिससे रेंगने वाले कीड़े व अन्य जानवर अंदर न आ सकें। यह घर पाक्सिउबा (Paxiuba) ताड़ की लकड़ी से बने मज़बूत खम्भों पर खड़ा था। घर की छतों और दीवारों के लिए भी पाक्सिउबा ताड़ की लकड़ी का ही प्रयोग किया गया था।

घर का फर्श पाक्सिउबा के तनों को काट कर बनाये तख़्तों से बनाया गया था। इन तख़्तों के बीच थोड़ा अंतर रखा गया था जिससे रोटी के ट्कड़े या चावल इत्यादि उन दरारों में से नीचे धरती पर गिर जाएँ। इस प्रकार घर का फर्श साफ़ बना रहता था और घर के नीचे घूमते-फिरते परिवार के जानवरों, जैसे सूअरों, मुर्गियों और बत्तखों को स्वादिष्ट भोजन भी मिल जाता था। जंगल की ही तरह, रबर टैपर के जीवन में भी कुछ भी व्यर्थ नहीं जाता था।

घर के अंदर एक बरामदा, भोजन-कक्ष और कुछ सोने के कमरे थे। सोने की अतिरिक्त व्यवस्था के लिए अक्सर बरामदे में जालीदार झूले या हैमक (Hammock) बांध दिए जाते थे। घर की छत ताड़ की सूखी पत्तियों और चटाइयों से बनाई गई थी।

रसोईघर मकान के एक कोने में बनाया गया था, जिससे लकड़ी के चूल्हे की गर्मी व धुआं पूरे घर में न फैले। खाना बनाने और बर्तन धोने का काम लकड़ी के एक चबूतरे पर किया जाता था, जो कि रसोई में लगाया गया था। इस चबूतरे से जो पानी नीचे जमीन पर गिरता था, उससे बनी कीचड में बत्तखें और सूअर खेला करते थे।

घर के आस-पास की खुली ज़मीन पर उनका परिवार सेम और चावल इत्यादि उगाता था, जिसके लिए वे खेती की उसी तकनीक का इस्तेमाल करते थे जो सदियों पहले रेड इंडियनों ने पुर्तगाली आगंतुकों को सिखाई थीं। वे अन्य खाद्य पदार्थ आस-पास के जंगल से शिकार करके या फल व मेवे इकट्ठा करके जुटाते थे।

जब वह छोटा था, चिको की दिनचर्या भी रबर टैपरों के अन्य बच्चों के समान ही होती थी। वर्षा-वन में बचपन का समय कोई बेफिक्री या मस्ती वाला नहीं था। छोटे बच्चों को भी दिन भर मेहनत करनी पड़ती थी।

जब चीको पांच साल का ही था, उसके करने के लिए बहुत से घरेलू काम होते थे, और खेलने का समय बहुत कम। रोज़ाना उसे बड़े-बड़े बर्तनों में पानी भर कर नदी से घर तक लाना पड़ता था। फिर उसे खाना पकाने के लिए लकड़ी भी इकट्ठी करनी होती थी। उसके बाद उसे बागीचे में काम करना होता था, या वहां से भोजन के लिए ताज़ी सब्ज़ियां लानी होती थीं।

रबर टैपरों के बच्चों का बचपन बहुत अल्पकालिक होता था। जब वह नौ साल का हुआ, तब पानी या लकड़ी लाने की ज़िम्मेदारी चीको की नहीं रह गई। यह काम अब और छोटे बच्चों को दे दिए गए। चीको के लिए तो अब बड़े लोगों की ज़िम्मेदारियाँ सँभालने का समय आ गया था।

अब समय आ गया था कि वह भी अपने पिता के साथ एक रबर टैपर के जीवन की शुरुआत करे।

"इकोलॉजिस्ट शब्द सुनने से बहुत पहले ही मैं एक इकोलॉजिस्ट बन चुका था।"

अध्याय ४ : एक रबर टैपर का जीवन

केवल नौ साल के चीको के लिए सुबह तड़के जागना शायद बिलकुल आसान नहीं रहा होगा। लेकिन वर्षा-वन का जीवन निश्चय ही बच्चों के लिए आसान नहीं था। "मेरे जीवन की शुरुआत दूसरे रबर टैपरों की तरह ही हुई, बिलकुल एक गुलाम की तरह, जो अपने मालिक का आदेश मानने को मजबूर था," चीको ने बताया। "मैं केवल नौ साल का था, जब मैंने काम करना शुरू कर दिया। अपने पिता की भांति ही, पढ़ना-लिखना सीखने के बजाय मैं उस उम्र में रबर के पेड़ से दूध इकठ्ठा करना सीख रहा था।"

हालाँकि १९०० के मुकाबले टैपरों की दशा में थोड़ा सुधार हुआ था, लेकिन रबर की इन जागीरों पर स्कूल खोलने की अभी भी मनाही थी। "रबर जागीरों के मालिक स्कूल खोलने की इजाज़त नहीं देते थे," चीको ने बताया, "क्योंकि अगर रबर टैपरों के बच्चे स्कूल गए, तो वे पढ़ना-लिखना और गणित सीखेंगे, और जल्दी ही समझ जायेंगे कि उनके साथ कितना बड़ा धोखा किया जा रहा था।"

और इस प्रकार, रोज़ सुबह, मुर्गे के बांग देने से बहुत पहले ही बालक चीको को जागना पड़ता था। वह और उसके पिता दलिये का नाश्ता करते, और गाढ़ी काली कॉफ़ी पीते। और फिर तड़के मुंह-अँधेरे ही वे घर से निकलने को तैयार हो जाते।

वे अपने औज़ार इकठ्ठा करते : रबर के पेड़ में छेद करने वाला एक चाकू, जिसे फासा दा सेरिंगा (Faca de Seringa) कहा जाता था, एक छुरा जो गिरे हुए पेड़ों या टहनियों को काट कर रास्ता बनाने के काम आता था, रबर के दूध को इकठ्ठा करने के लिए कटोरे और बाल्टियां, और एक बड़ा थैला, उन फलों और मेवों को इकठ्ठा करने के लिए, जो उन्हें जंगल में अक्सर मिल जाया करते थे।

फ्रांसिस्को अपना पोरोंगा (Poronga) यानि मिटटी के तेल वाला हेलमेट पहन लेता। पोरोंगा के सामने की ओर एक दिए की बाती थी, जो मिटटी के तेल में डूबी रहती थी, और इसके पीछे एक आईने सी चमकदार चकती होती थी। जब फ्रांसिस्को इस बाती को जलाता, तो यह चकती उसकी रौशनी को सामने की ओर फेंकती थी। इस पोरोंगा की रौशनी से ही वे जंगल की धुन्धलकी पगडंडियों में अपना रास्ता ढूंढ पाते थे। (आजकल के रबर टैपर बैटरी वाली टॉर्च का इस्तेमाल करते हैं।)

फ्राँसिस्को और चीको ने अपना काम चुपचाप, लेकिन फुर्ती से शुरू कर दिया, और एक पगडण्डी पर चल पड़े। एक पगडण्डी पर आम तौर से लगभग २०० रबर के पेड़ होते हैं, जो एक दूसरे से लगभग १०० फ़ीट की दूरी पर होते हैं, यानि लगभग एक फुटबाल के मैदानं की लम्बाई जितनी दूरी पर। रबर टैपरों को तेज़ी से चल कर सुबह सवेरे ही हरेक पेड़ तक पहुंचना होता है, क्योंकि इसी समय दूध सबसे आसानी से निकलता है।
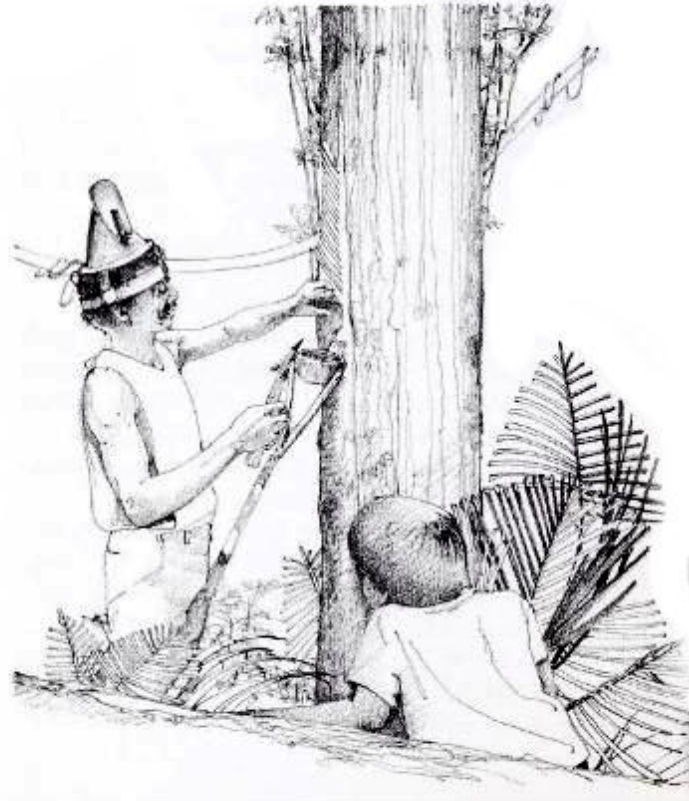
छोटा सा चीको जितना तेज़ चल सकता था, चल रहा था, जिससे कि वह अपने पिता से पीछे न छूट जाये। लंगड़ाते हुए भी, फ्रांसिस्को बड़ी तेज़ी से जंगल के उस ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर आगे बढ़ रहा था। अपने पिता के पीछे चलते समय चीको ने बहुत सावधान रहना सीख लिया था। इस बात का खतरा हमेशा बना रहता था कि कहीं जमीन पर गिरी किसी टहनी या मोटी-मोटी लताओं में पैर टकराने से वह गिर न जाये। फ्रांसिस्को ने चीको को यह भी सिखाया था कि वह उन ज़हरीले साँपों और कीड़ों से सावधान रहे, जो कि अक्सर जंगल में सूखी पत्तियों के नीचे छिपे होते थे।

लेकिन सबसे महत्वपूर्ण पाठ जो चीको ने अपने पिता से सीखा था, वह वही था जो उस जंगल के निवासी रेड इंडियन लोगों ने वहां आकर बसने वाले पुर्तगालियों को सिखाया था : फ्रांसिस्को ने अपने बेटे को जंगल के साथ सामंजस्य से रहना सिखाया था। "इकोलॉजिस्ट शब्द सुनने के बहुत पहले ही मैं एक इकोलॉजिस्ट बन चुका था," चीको ने एक बार कहा था।

एक रबर टैपर के लिए जंगल में जीवन के नाज़ुक संतुलन को समझना बहुत आवश्यक था। जंगल का स्वस्थ और संतुलित में रहना उनकी आजीविका का आधार है। इसलिए रबर टैपर एक ही पेड़ से रोज़-रोज़ दूध नहीं निकालते। बल्कि हर दिन वह एक अलग पगडण्डी पर जाते हैं, जिससे कि अगली बार दूध निकलने से पहले पेड़ों को पुनः स्वस्थ होने का समय मिल जाए। इस प्रकार पेड़ों का स्वास्थ्य बना रहता है, और वे अच्छा दूध प्रदान करते रहते हैं।

क्योंकि उनकी आजीविका जंगल के स्वास्थ्य पर निर्भर है, सभी टैपर रबर के पेड़ का बहुत आदर करते हैं। चीको के चचेरे भाई सेबस्तिआओ ने टैपर और रबर के पेड़ के बीच के इस ख़ास रिश्ते को समझाया। "साल दर साल, रबर का पेड़ हमारी मां की तरह हमें पालता है," सेबस्तिआओ ने कहा। "उसका दूध हमारे खून की तरह है। हम पेड़ को काटते रहते हैं, और वह हमें दूध देता रहता है। हर वर्ष वह हमें बहुत कुछ देता है, हमारी रोज़ी-रोटी उसी से चलती है।"

पगडण्डी पर उसे जब पहला रबर का पेड़ मिला, फ्रांसिस्को ने अपने चाकू से उसकी नरम छाल में V के आकार का चीरा लगाया। चीको को पता था कि चीरे की गहराई बिलकुल सही होनी चाहिए। ज़्यादा गहरा चीरा पेड़ को हानि पहुंचाएगा, और अगर कम गहरा हुआ तो दूध नहीं निकलेगा। फ्रांसिस्को पिछली बार लगाए गए चीरे से या तो ऊपर, या फिर नीचे, नया चीरा लगाता, और V आकार के इन चीरों का पैटर्न टैपिंग के मौसम में लगाये पहले चीरे से शुरू होकर बढ़ता चला जाता।
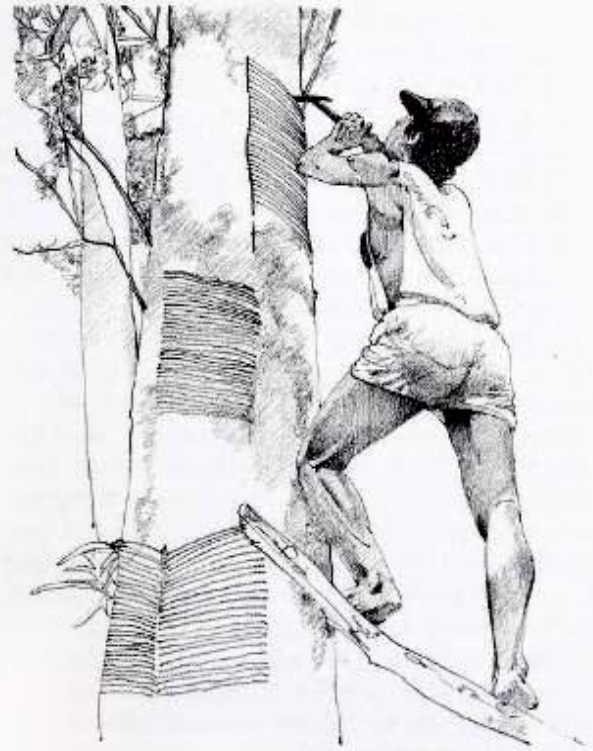
जैसे ही फ्रांसिस्को यह चीरा लगाता, V-आकार के उस चीरे से दूध रिसना शुरू हो जाता। चीको V की नोक के ठीक नीचे एक कटोरा रख देता। यदि चीरा ऊँचाई पर होता तो चीको घर की बनाई एक सीढ़ी पर चढ़ कर कटोरा वहां लटकाता। दूध कटोरे में इकट्ठा होने लगता, लेकिन तब तक चीको और उसके पिता १०० गज़ आगे पगडण्डी के अगले पेड़ तक पहुँच चुके होते।

दोपहर होते-होते चीको और उसके पिता इस छल्ले-नुमा पगडण्डी के अंत तक, यानी वापस अपने घर के समीप पहुँच गए होते। चावल और सेम की सब्ज़ी का भोजन करके वह फिर जंगल को लौट जाते। फिर से उसी पगडण्डी पर तेज़ी से एक पेड़ से दूसरे पेड़ जाकर वे दूध से भरे कटोरों और बाल्टियों को वापस इकट्ठा करते।

इतना सब करके घर लौट आने के बाद भी उनका दिन भर का काम अभी पूरा नहीं हुआ होता था। इस दूध को पका कर रबर बनाना अभी बाकी था। इसके लिए चीको और उसके पिता एक चम्मच से दूध को एक छड़ी पर टपकाते। यह छड़ी एक शंकु आकर के चूल्हे के ऊपर लटकी होती थी। परत-दर-परत दूध को छड़ी पर टपकाया जाता था, जब तक कि पकी हुई रबर एक बड़ी फुटबॉल जैसी न दिखने लगती।

यह काम पूरा करने के बाद रात को चीको अपने पिता के बिस्तरे में घुस जाता, और फ्रांसिस्को उसे कहानियां पढ़ कर सुनाता, जिन्हें चीको बड़े चाव से सुनता था। चीको की लिखना-पढ़ना सीखने में रूचि थी, और उसके पिता ने जल्दी समझ लिया कि चीको तीव्र-बुद्धि का था।

फ्रांसिस्को के एक मित्र ने कहा, "जब वह छोटा सा था, किसी ने सोचा भी न होगा कि बड़ा होकर वह ऐसा व्यक्ति बनेगा। उसे देख कर विश्वास नहीं होता था। हर कोई सराहना करता, कि इतना छोटा बच्चा इतना अच्छा कैसे पढ़ सकता है।"

१९५६ आते-आते, जब चीको ११ वर्ष का था, वह पूरी तरह रबर टैपर के काम में लग गया। तब तक फ्रांसिस्को ने, जितना भी पढ़ना-लिखना और गणित उसे आता था, चीको को सिखा दिया था। जैसे-जैसे चीको ने स्वयं आगे पढ़ना सीखा, और उसे गणित की अधिक समझ आई, उसने महसूस किया कि उसके पिता ने उसे कुछ और भी सिखाया था। उसे समझ आने लगा, अपने पिता का इस बेईमानी भरी व्यवस्था पर रोष, जो रबर टैपरों को कर्ज़े से बाहर निकलने ही नहीं देती थी।

फिर भी, अन्य रबर टैपरों की बच्चों की भांति ही, शायद चीको भी अपने सारी ज़िन्दगी रबर इकट्ठा करने में ही बिता देता। लेकिन १९६२ में, जब चीको १७ वर्ष का था, उसके साथ कुछ ऐसा हुआ, जिसने उसके जीवन की दिशा ही बदल दी।

एक दिन दोपहर के समय चीको और उसके पिता रबर के दूध को आग पर पकाने में व्यस्त थे। जंगल में से एक अजनबी वहां आया, और चीको के पिता से बातचीत करने लगा। हालाँकि उसकी वेश-भूषा एक रबर टैपर जैसी ही थी, लेकिन वह अन्य रबर टैपरों जैसा दुबला-पतला नहीं था, और न ही उसकी बोल-चाल रबर टैपरों जैसी थी। उससे भी अधिक असामान्य बात यह थी, कि उसकी जेबों में कई अखबार भरे हुए थे, जो कि अमेज़ॉन में एक असाधारण बात थी। "उन दिनों," बहुत सालों बाद चीको ने स्वीकार किया, "मुझे यह पता भी नहीं था कि अख़बार होता क्या है।"

वह आदमी, जिसका नाम युक्लिडेस तावोरा था, चीको के पिता से राजनीति और सामयिक घटनाओं के बारे में बातें कर रहा था। उन दोनों की बातें सुन कर चीको को इस बात से बहुत कौतूहल हुआ, कि तावोरा को वर्षा-वन के बाहर के संसार के बारे में कितनी जानकारी थी। वह इस बात से भी बहुत प्रभावित हुआ कि यह अजनबी कितना अच्छा पढ़ पाता था। जब तावोरा ने चीको की पढ़ने के योग्यता सुधारने में मदद की पेशकश की, तो चीको ने अपने पिता से इसके लिए अनुमति मांगी। जब तावोरा वहां से चलने लगा, फ्रांसिस्को ने चीको को अगले शनिवार की दोपहर को तावोरा के पास जाने की अनुमति दे दी।

वर्षा-वन में होकर तावोरा के घर तक का रास्ता लगभग तीन घंटे का था। फिर भी अगले शनिवार ही नहीं, अगले तीन सालों तक हर शनिवार को चीको ने यह लम्बा जंगल का रास्ता तय किया। "वह बहुत होशियार था," चीको ने अपने इस नए मित्र के बारे में कहा। "शनिवार व रविवार को वह सारा दिन मुझे पढ़ाता। हम अखबार पढ़ते, और वह मुझे सारे समाचार विस्तार से समझाता, और संसार भर में चल रहे श्रमिकों के संघर्ष के बारे में मुझे बताता।"

चीको और तावोरा रेडियो पर समाचार भी सुनते, और सारी-सारी रात जाग कर विश्व की घटनाओं के बारे में चर्चा करते। तावोरा ने चीको के मन में रबर टैपरों की दयनीय दशा का दुखड़ा रोने के बजाय, कुछ करने की प्रेरणा जगाई। उनके संपर्क के आखिरी दिनों के एक वार्तालाप में तावोरा ने चीको से कहा कि रबर टैपरों के हितों के विरूद्ध कार्य करने वाली इस व्यवस्था को बदला जा सकता है, लेकिन इस काम को अकेले कर पाना संभव नहीं है। सभी टैपरों को एकजुट कर एक मज़बूत संगठन बनाना होगा, जिसे श्रमिक संघ कहा जाता है। "उसने कहा," चीको बोला, "कि तब तक मुझे इंतज़ार और अध्ययन करना चाहिए।"

१९६५ में, प्रसव के दौरान चीको के मां का देहांत हो गया। इसके अलावा, चीको के भाई रायमुंडो की, जो चीको की तरह ही एक टैपर था, एक दुर्घटना में गोली लगने से मृत्यु हो गई। चीको के पिता का अब फसल की देख-भाल के लिए घर पर ही रहना ज़रूरी हो गया, और पगडंडियों से रबर इकट्ठा करने का काम अकेले चीको के ऊपर आ गया। अब उसके पास तावोरा के घर जाने के लिए समय नहीं था, और इस कारण उनकी यह मित्रता जारी न रह पाई। लेकिन चीको के जीवन पर तावोरा की बातों का प्रभाव अभी आरम्भ ही हुआ था।

"हम इसमें अपने आदर्शों के कारण सम्मिलित हैं, और हम कभी भी पीछे नहीं हटेंगे।"

अध्याय ५ : बरबादी की शुरुआत

तावोरा के बिना चीको को अपनी ज़िन्दगी अधूरी सी लग रही थी। लेकिन उसने टैपरों के भले के लिए कार्य करना शुरू कर दिया। उसने अन्य सेरिन्गुइरोस को पढ़ना-लिखना सिखाना शुरू किया। "वे सभी सीखना चाहते थे," मेंडेस ने कहा, "क्योंकि वे साफ़ देख रहे थे कि उनको कितना धोखा दिया जा रहा था।"

एक नए आत्म-विश्वास के साथ मेंडेस ने ब्राज़ील के राष्ट्रपति को एक पत्र लिखा। उसने शिकायत की कि रबर जागीरों के मालिक टैपरों को धोखा दे रहे हैं। उसने बताया कि रबर टैपरों के बच्चों को स्कूल जाने की अनुमति नहीं है, और जब वे बीमार हों, तो उनके लिए कोई अस्पताल भी नहीं हैं।

मेंडेस ने एक के बाद एक कई पत्र लिखे,लेकिन कभी कोई जवाब नहीं आया। चीको मेंडेस समझ गया, कि अगर बदलाव लाना है, तो उसे यह खुद ही करना होगा। और इसकी शुरुआत खुद उसके अपने सेरिंगल से करनी होगी। इस प्रकार रबर टैपरों की स्थिति में बेहतरी के लिए संघर्ष का आरम्भ सेरिंगल कचोईरा से हुआ।

रबर टैपरों को संगठित करने के लिए मेंडेस आतुर था। लेकिन टैपर हर काम अकेले करने के आदी थे, और साथ मिल कर काम करने की बात उनको समझ न आती थी। "१९६८ में मैंने रबर टैपरों को संगठित करने का प्रयत्न किया," मेंडेस ने कहा, "पर मुझे इसमें बहुत दिक्कतें आई। लोगों को इस ओर आकर्षित करना बड़ा मुश्किल था।" लेकिन कुछ ऐसी घटनाएं घट रही थीं, जिनसे जल्दी ही संसार भर के बहुत से लोगों का ध्यान रबर टैपरों की ओर आकर्षित होने वाला था।

१९६९ में पूर्वोत्तर ब्राज़ील में लगभग ३ करोड़ लोग अत्यधिक गरीबी में ठसाठस भरी झोपड़-पट्टियों में रह रहे थे। इस समस्या के समाधान के लिए सरकार ने शहरी परिवारों के पुनर्वास के लिए एक बड़ी योजना प्रारम्भ की। इस "राष्ट्रीय एकता कार्यक्रम" का उद्देश्य था कि ब्राज़ील के पूर्वी शहरों से परिवारों को दूर-दराज़ पश्चिमी क्षेत्रों में भेजा जाये, जो कि वर्षा-वन के बीचो-बीच स्थित थे।

लोगों को इस स्थानांतरण के लिए प्रेरित करने हेतु सरकार उन्हें वर्षा-वन में खेती करने के लिए ज़मीन का एक टुकड़ा और दो कमरे का घर दे रही थी। सरकार ने उनके लिए स्कूल और अस्पताल बनाने का भी वादा किया था, और यहाँ तक कि फसलें बोने के लिए आर्थिक सहायता देने की गारंटी भी दी थी।

इसके अलावा, फार्म-मालिकों को सरकार प्रेरित कर रही थी कि वे जंगल साफ़ करके पशु-पालन का काम अपनाएं। इन पशुओं का मांस दूसरे देशों को बेच कर ब्राज़ील और धन कमा सकता था, जिसकी उसे सख्त ज़रूरत थी।

१९६९ में, राष्ट्रीय एकता कार्यक्रम की घोषणा से पहले, अमेज़न का जंगल उतना ही दूरस्थ और अगम्य था, जितना ३५ साल पहले मेंडेस परिवार के वहां आने के समय। लेकिन १९६९ और १९७५ के बीच बहुत कुछ बदल गया। अमेज़ॉन के जंगल की गहराई तक जाने वाले बी-आर-३६४ नामक एक राज-मार्ग का निर्माण हो गया, जिसे ट्रांस-अमेज़ॉन राजमार्ग भी कहा जाता था।

जैसे इस राजमार्ग के निर्माण का कार्य आगे बढ़ा, विशालकाय बुलडोज़रों ने जंगल को हटाना शुरू कर दिया, और केवल सूनी ज़मीन पीछे रह गई। सबसे पहले दक्षिणी अमेज़ॉन में पेड़ों की कटाई शुरू हुई। जल्दी ही बी-आर-३६४ बढ़ते-बढ़ते मेंडेस के राज्य आक्रे तक पहुँच गया।
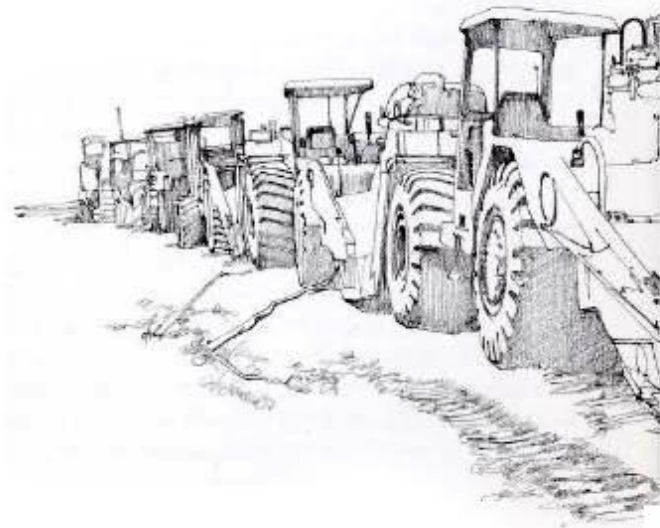
हज़ारों परिवार, जो इस मार्ग से सफर कर रहे थे, उन्हें वर्षा-वन के इकोसिस्टम की कोई समझ नहीं थी। जब वे वन के बड़े-बड़े हिस्सों को काट कर जलाते, उन्होंने इस बात का ध्यान नहीं रखा, कि आस-पास का वन सुरक्षित रहे, जैसा कि रेड इंडियन और रबर टैपर किया करते थे। उन्होंने उस धरती पर खेती करना तो शुरू कर दिया, पर उन्हें यह पता नहीं था कि मिट्टी के पोषक तत्व जल्दी ही समाप्त हो जायेंगे।

जब वन की मिट्टी से पर्याप्त उपज मिलनी बंद हो जाती, उन्हें वह धरती छोड़नी पड़ती, और वे जंगल का दूसरा हिस्सा काट कर वहां खेती करने लगते। उनकी छोड़ी हुई भूमि बर्बाद और निष्प्राण हो जाती। और जिस नई भूमि पर वे जाते, कुछ वर्षों में उसका भी वही हश्र होता।

किसानों द्वारा की जा रही इस हानि के अतिरिक्त वर्षा-वन के उससे कहीं अधिक निर्दय शत्रु थे बड़े मवेशी-खानों के मालिक। क्योंकि मिटटी की उपजाऊ क्षमता इतनी कम थी, मात्र एक पशु के चरने के लिए पूरे एक हेक्टेयर (लगभग २.५ एकड़) ज़मीन की ज़रूरत पड़ती थी। बड़े मवेशी-खानों के पशुओं के लिए चरागाह बनाने के वास्ते वन के अत्यधिक विशाल हिस्सों को काट-काट कर जला दिया जाता था।

इन मवेशी फार्मों के मालिकों ने तो जैसे जंगल पर आक्रमण ही कर दिया, और लाखों को संख्या में पेड़ों को काट कर जलाया। मेंडेस के अपने शहर सापुरी में ही १९७० से १९७५ के बीच आरियाँ और मशालें संभाले इन लोगों ने १८०००० रबर के पेड़, ८०००० ब्राज़ील नट के पेड़, और बारह लाख से भी अधिक अन्य प्रजातियों के पेड़ आग के हवाले कर दिए। जैसे यह आग धू-धू कर तेज़ी से चारों फैलती, धुंए के घने, काले बादल वर्षा-वन के ऊपर मंडराने लगते।

चीको मेंडेस को पता था कि जंगल और रबर टैपरों की आजीविका को बचाने के लिए समय बहुत कम रह गया था। यदि जंगल समाप्त हो गया तो रबर टैपर भी बर्बाद हो जायेंगे। मेंडेस को लगा कि टैपरों को संगठित करने की एक और कोशिश करने का समय आ गया है। "जैसे ही मुझे पता चला कि एक श्रमिक संघ की स्थापना की जा रही है," मेंडेस ने याद किया, "मुझे तावोरा के शब्द याद आ गए, और मैं बिना किसी न्यौते का इंतज़ार किये सीधा वहां चला गया।"

मेंडेस १९७५ में राष्ट्रीय श्रमिक संघ में शामिल हो गया। यह वही साल था जब उसके पिता की मृत्यु हुई थी। १९७६ में उसे सापुरी की नगर-सभा के लिए चुना गया। श्रमिक संघ की गतिविधियों और सभासद की ज़िम्मेदारियों के चलते अब उसके पास रबर इकट्ठा करने के लिए बहुत कम समय बचता था। अब वह टैपरों का नेता बन गया था। अपने टैपर साथियों के लिए वह पिता समान था। वह उनके लिए संघर्ष करता, और उन्हें स्वावलम्बी बनने के लिए प्रोत्साहित करता।

१९७६ में ही चीको मेंडेस ने अपने पहले विरोध अभियान, या एम्पाते (Empate), का नेतृत्व किया। मेंडेस और उसके टैपर साथियों के एक समूह ने जंगल के एक बड़े हिस्से को काट रहे मज़दूरों को घेर लिया। टैपरों ने यह विरोध तीन दिन तक जारी रखा, जब तक कि वे मज़दूर अपने आरों को लेकर वहां से चले नहीं गए।

टैपर और उनके परिवार मवेशी-खानों के मालिकों द्वारा जंगल के विनाश का विरोध करते ही रहे। कई बार ३०० से भी अधिक लोग पेड़ों को बचाने के लिए एकत्र हो जाते। वे एक दूसरे के हाथों को पकड़ एक मानव श्रंखला बना लेते, और बुलडोज़रों और आरा चलाने वालों के सामने खड़े हो जाते। १३ वर्षों में मेंडेस ने दर्जनों इस प्रकार के विरोध अभियान चलाये। अनुमान है कि इन अभियानों के कारण वर्षा-वन का लगभग तीस लाख एकड़ क्षेत्र कटने से बच गया।

"हमारा आंदोलन शांतिपूर्ण है," मेंडेस ने कहा। "रक्तपात हमारे आंदोलन का उद्देश्य बिलकुल नहीं है। इस आंदोलन का प्रयास है कि लोगों में इन विशाल समस्याओं का डट कर सामना करने की जागरूकता आये।"

१९७७ के अप्रैल महीने में मेंडेस और उसके टैपर साथियों ने सापुरी का एक स्थानीय श्रमिक संघ बना लिया। "मैं इस श्रमिक आंदोलन में अधिकाधिक लिप्त होता चला गया," मेंडेस ने कहा। "मुझे लगता था कि यह आंदोलन मेरे लिए सर्वोत्तम कार्य-क्षेत्र है।"

जैसे जैसे श्रमिक संघ का प्रभाव बढ़ने लगा, मवेशी-खानों के मालिकों ने पलटवार करने का निश्चय किया। रबर टैपरों के शांतिपूर्ण विरोध का जवाब हिंसा से मिला। श्रमिक संघ के सदस्यों के घर जलाये गए। संघ के नेताओं व अन्य लोगों को, जिन्होंने इस आंदोलन का समर्थन किया था, जान से मारने की धमकियाँ मिलने लगीं। फिर, जुलाई १९८० में विल्सन पिन्हेरो, जो कि संघ का अध्यक्ष और मेंडेस का घनिष्ठ मित्र था, की हत्या कर दी गई।

मेंडेस समझ गया कि जंगल को बचाने का यह आंदोलन काफी खतरों से भरा था। उसने देखा था की पिन्हेरो के साथ क्या हुआ। "यह मेरे साथ भी हो सकता था," उसने कहा। लेकिन वह समझता था की आंदोलन का जारी रहना ज़रूरी था :

"हम इसमें अपने आदर्शों के कारण सम्मिलित हैं, और कभी पीछे नहीं हटेंगे। हमारी जड़ें इतनी गहरी हैं कि हम आंदोलन समाप्त करने की बात सोच भी नहीं सकते। इस आंदोलन को परास्त करने के लिए उन्हें हम सबको मारना होगा। अब मुझे मृत्यु का कोई भय नहीं है। यदि हम में से कोई मारा भी जाता है, तो भी आंदोलन जारी रहेगा। बल्कि यह और मज़बूत हो जाएगा।"

"हमारा संघर्ष जंगल के सभी लोगों का संघर्ष है।"

अध्याय ६ : वन की रक्षा के लिए संगठित

मवेशी-खानों के मालिकों को उम्मीद थी कि हिंसा का भय आंदोलन के नेताओं के प्रयासों को कमज़ोर कर देगा। लेकिन जैसा कि मेंडेस ने कहा था, आंदोलन और तेज़ हो गया।

"उस के बाद से निर्वनीकरण के विरुद्ध संघर्ष का रास्ता सापुरी के रबर टैपरों ने दिखाया," मेंडेस ने कहा। "सापुरी के संघ ने प्रस्ताव रखा कि और अधिक लोगों को आंदोलन में शामिल करने के लिए जनता को शिक्षित करने का कार्य किया जाए।"

१९७९ में श्रमिक संघ ने टैपरों को पढ़ना और लिखना सिखाने का कार्यक्रम शुरू किया। पहली बार वर्षा-वन के बच्चों के लिए स्कूल खोले गए।

फिर १९८० में संघ ने "रबर टैपरों के प्रोजेक्ट" (Projeto Seringueiro) नाम से एक शैक्षिक कार्यक्रम शुरू किया। मेंडेस ने बताया कि इसका उद्देश्य था कि "रबर टैपरों को वर्षा-वन के साथ अधिक नज़दीकी से जुड़ने के लिए प्रेरित किया जाए। हम चाहते थे कि टैपर वर्षा-वन के बारे में और अधिक शिक्षित हों, इसकी प्रणाली को समझें, और इसकी सुरक्षा के लिए कटिबद्ध हों।"

श्रमिक संघ का कार्य करने के लिए मेंडेस को अपनी निजी ज़िन्दगी में बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। उसका पहला विवाह पहले ही विफल हो चुका था।

१९८३ में मेंडेस ने एक महिला, इल्ज़ामार गाडेल्हा, से विवाह किया, जिसे वह अनेक वर्षों से जानता था। १९८४ में उनकी पुत्री एलेनीरा का जन्म हुआ। लेकिन इल्ज़ामार का जीवन अक्सर बहुत अकेला और मुश्किलों भरा होता था।

"अक्सर ही मुझे यह बात परेशान करती थी, कि चीको के पास मेरे लिए समय ही नहीं था," उसने याद किया। "लेकिन जब उसने मुझे अपने काम के बारे में विस्तार से बताया, तब मुझे समझ आया कि उसका काम कितना महत्वपूर्ण था, और फिर मेरी शिकायत दूर हो गई।"

जैसे टैपरों का संघर्ष आगे बढ़ा, उन्हें समझ आया कि उन्हें जंगल के लिए एक समुचित योजना की आवश्यकता थी। यह ज़रूरी था कि वे सरकार को विश्वास दिलाएं कि वर्षा वन का सही उपयोग चिरस्थायी खेती करने में है, न कि मवेशी फार्मों द्वारा उसकी बर्बादी में।

"हमें समझ आया कि जंगल का भविष्य सुरक्षित करने के लिए," मेंडेस ने कहा, "हमें धरती को बचाने का कोई उपाय खोजना होगा, और साथ ही इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को भी विकसित करना होगा।" अमेज़ॉन की प्राकृतिक सम्पदा एकदम अछूती रहे, इसकी उसे अपेक्षा नहीं थी।

लेकिन मेंडेस को यह भी पता था कि, " अमेज़ॉन पर छाये निर्वनीकरण के संकट को रोकना आवश्यक था, जो कि पूरी धरती की मानव जाति के लिए एक खतरा था। हमें लगा कि हमारी योजना न केवल जंगल को बचाने की होनी चाहिए, बल्कि उसमें आर्थिक विकास की योजना भी शामिल होनी चाहिए।"

सापुरी के श्रमिक संघ ने अक्टूबर १९८५ में रबर टैपरों का एक राष्ट्रीय सम्मलेन ब्राज़ील की राजधानी ब्रासीलिया में आयोजित करने का विचार किया। संघ चाहता था कि इस सम्मलेन में रबर टैपर वर्षा-वन के भविष्य के बारे में कोई योजना बनाएं।

श्रमिक संघों की एक कमेटी ने, जिसमें रबर टैपर प्रोजेक्ट व अन्य संगठनों के लोग शामिल थे, इस सम्मलेन के बारे में प्रचार-प्रसार किया। टैपरों के पहले राष्ट्रीय सम्मलेन की घोषणा वाले पोस्टर जंगलों और आस-पास के शहरों में चिपकाये गये। हेलिओ मेलो नाम के एक टैपर ने ही इस पोस्टर का डिज़ाइन तैयार करके इसे बनाया था। कमेटी के सदस्यों ने गहरे जंगलों में जा-जाकर यह सुनिश्चित किया कि सारे टैपरों को इस सम्मलेन की जानकारी मिले।
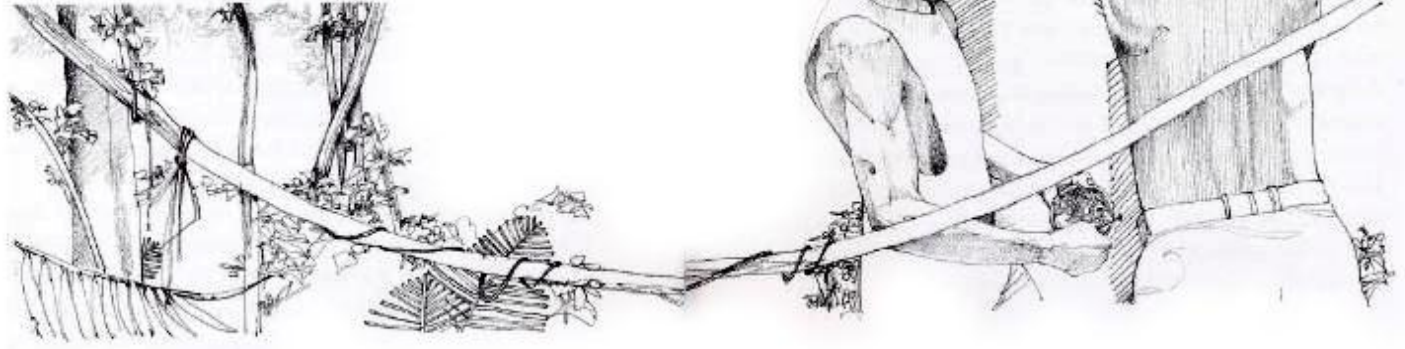
अक्टूबर १९८५ के मध्य में पूरे अमेज़न से रबर टैपर ब्रासिलिया पहुंचे। सम्मलेन में पहुँचने के लिए उन्हें अमज़ोनिया की तपती धूल-भरी सड़कों पर कई दिनों तक बस से सफर करना पड़ा था। उनमे बहुत से ऐसे भी थे जिन्होंने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार अपने गांव या शहर से बाहर की यात्रा की थी। "अमेज़ोनिया के पूरे इतिहास में," मेंडेस ने कहा, "ऐसी घटना पहले कभी नहीं घटी थी।"

सम्मलेन का पहला परिणाम यह रहा, कि रबर टैपरों की राष्ट्रीय समिति (National Council of Rubber Tappers) की स्थापना की गई। इस समिति का ध्येय था रबर टैपरों को एक संगठित आवाज़ प्रदान करना। अब टैपरों का अपना एक संघ था। लेकिन इसके अतिरिक्त भी इस सम्मलेन के कई दूरगामी परिणाम थे।

स्वयं संगठित होने के बाद, रबर टैपरों ने अमेज़न के रेड इंडियन लोगों से भी मैत्री की प्रक्रिया शुरू की। इन दोनों. समुदायों में वर्षों पुरानी शत्रुता होने के बावजूद, दोनों यह समझ रहे थे कि जंगल को बचाने के संघर्ष में दोनों ही सहभागी हैं।

"हमें समझ आ गया था, कि हमारा आज का संघर्ष एक ही बात के लिए है,", मेंडेस ने कहा। "रेड इंडियन लोगों का संघर्ष भी वही होना चाहिए जो रबर टैपरों का है। हम एक दूसरे के शत्रु नहीं हैं। अमेज़न की रक्षा के लिए हमें साथ मिल कर लड़ना होगा।"

" हमारा संघर्ष जंगल के सभी लोगों का संघर्ष है," चीको मेंडेस ने घोषणा की।

रबर टैपरों को संगठित करने के अपने कार्य के दौरान मेंडेस को पता चला कि सरकार ने बचे हुए रेड इंडियन लोगों की सुरक्षा के लिए कार्यक्रम चलाना आरम्भ कर दिया है। पिछले ४०० वर्षों में वहां के मूल-निवासी रेड इंडियनों की संख्या ६० लाख से घट कर मात्र ढाई लाख रह गई थी। रेड इंडियनों को बचाने के लिए ऐसे कानून बनाये गए थे जिससे अमेज़न के उन क्षेत्रों का विनाश रोका जा सके, जहाँ रेड इंडियन अभी भी रहते थे। इन क्षेत्रों को सुरक्षित क्षेत्र घोषित कर दिया गया।

मेंडेस को लगा कि रबर टैपरों के लिए भी इसी प्रकार के उपाय कारगर साबित हो सकते हैं। वे क्षेत्र, जहाँ टैपर कार्य करते हैं, उन्हें विनाश से बचाया जाना चाहिए। क्योंकि रबर टैपर वर्षा-वन से रबर के दूध व अन्य पदार्थों का संग्रह करते हैं, संघ ने इन क्षेत्रों को सुरक्षित संग्रह क्षेत्र का नाम दिया।

"हमें लगा कि यह अमज़ोनिया की धरती का सर्वोत्तम उपयोग होगा,", मेंडेस ने बताया। "हम रबर टैपरों ने स्वयं को कभी भी इस धरती का मालिक नहीं समझा। हम चाहते हैं कि इस धरती पर मालिकाना हक़ सरकार का होना चाहिए, और रबर टैपरों को इसके उपयोग का अधिकार मिलना चाहिए।"

रबर टैपरों के संघ ने जल्दी ही अन्य देशों के संगठनों के साथ सम्बन्ध बनाये। वर्षा-वन का भविष्य अब एक अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा बन चुका था।

विश्व भर में लोगों को वर्षा-वन के विनाश के बारे में जानकारी मिल रही थी। ऐसा कहा जा रहा था कि प्रत्येक सेकेण्ड एक फुटबाल के मैदान के बराबर वर्षा-वन का क्षेत्र नष्ट किया जा रहा था। एक वर्ष में वाशिंगटन राज्य के बराबर क्षेत्रफल के जंगल का निर्वनीकरण हो रहा था।

पेड़-पौधों, कीट-पतंगों, पशु-पक्षियों और मछलियों की अनेक प्रजातियां, जिनके लिए वर्षा-वन ही एकमात्र घर था, अब खतरे में थीं। वैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों ने आगाह किया था कि वर्षा-वन के इस विनाश का पूरे ग्रह पर भयंकर दुष्प्रभाव पड़ना निश्चित था।

दूसरे देशों ने ब्राज़ील से आग्रह किया कि वह वर्षा-वन के इस विनाश को रोके। लेकिन इस क्षेत्र को विकसित करने के आर्थिक लाभ इस नितांत निर्धन देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे।

सुरक्षित संग्रह क्षेत्रों के गठन के प्रस्ताव ने लोगों को यह दर्शाया कि वर्षा-वन के पर्यावरण को बिना कोई हानि पहुंचाए भी वन से बहुत से लाभकारी उत्पादों की उपज संभव है। वास्तव में वन का इस प्रकार उपयोग करना पशु-फार्मों की अपेक्षा अधिक लाभकारी हो सकता था।

बीस वर्ष की अवधि में एक एकड़ भूमि से केवल १५ डॉलर मूल्य के पशु-मांस का उत्पादन हो सकेगा। लेकिन उसी एक एकड़ का उपयोग यदि रबर, ब्राज़ील-नट व अन्य दीर्घकालिक उत्पादों के लिए किया जाये, तो उसका मूल्य ७२ डॉलर से भी अधिक होगा।

और फिर सुरक्षित रहने पर वन पीढ़ी-दर-पीढ़ी ये उत्पाद देता रहेगा, जबकि पशु-पालन के लिए प्रयोग की गई भूमि जल्दी ही निष्प्राण हो जाएगी।
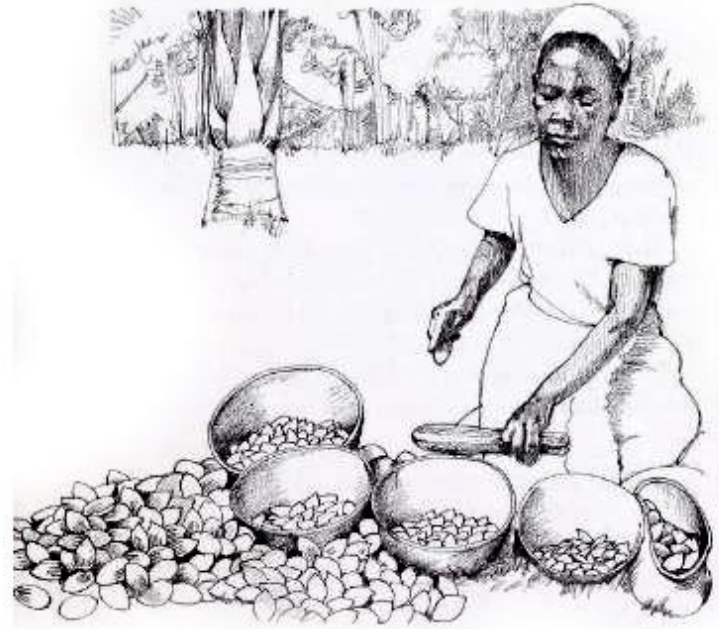
चीको मेंडेस ने संसार को यह सिद्ध कर दिया था कि दीर्घकालीन खेती से वन के संरक्षण के साथ देश की आर्थिक प्रगति भी संभव थी। जब मेंडेस ने सुरक्षित संग्रह क्षेत्रों के गठन का अभियान शुरू किया तो उसे विश्व भर के पर्यावरणविदों ने सराहा।

मार्च १९८७ में अमेरिका के पर्यावरण संगठनों ने मेंडेस को वाशिंगटन आने का निमंत्रण दिया। वहां उसने वर्षा-वन को बचाने के संघर्ष के विषय में सीनेट व कांग्रेस के सदस्यों को सम्बोधित किया। जो कोई भी उससे मिला, ब्राज़ील के जंगल से आये इस विनम्र रबर टैपर की मज़बूती और दृढ़ निश्चय से प्रभावित हुआ।

उसी वर्ष संयुक्त राष्ट्र संघ ने चीको मेंडेस को वर्षा-वन के लिए उसके कार्य के लिए पुरस्कृत किया। श्रेष्ट संसार संस्था (Better World Society) ने भी उसे पर्यावरण संरक्षण पदक (Protection of Environment Medal) से सम्मानित किया।

श्रेष्ठ संसार संस्था के इस सम्मान समारोह में मेंडेस ने श्रोताओं को इन सादगीपूर्ण शब्दों से सम्बोधित किया :

"मैं एक रबर टैपर हूँ। मेरे लोग पिछले १३० वर्षों से वन में रह कर, उसे कोई हानि पहुंचाए बिना, उसके संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं। हमारा अमेरिका के लोगों से यही आग्रह है कि वे हमारी सहायता करें। साथ मिल कर हम वन की रक्षा कर सकते हैं, और उसके संसाधनों का उपयोग भी। एक ख़ज़ाने जैसे इस महान संसाधन की हम अपनी भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षा कर सकते हैं।"
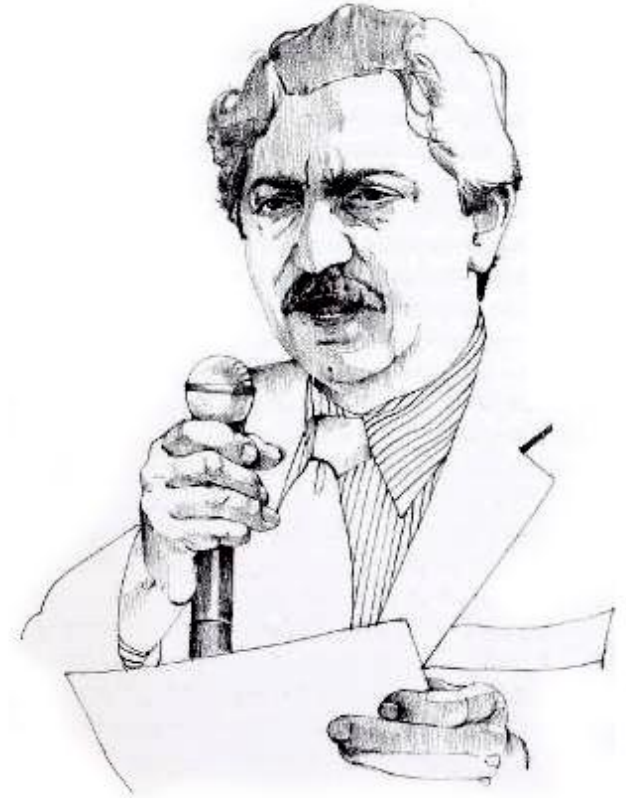
चीको वन को बचाने के अपने संघर्ष में अब अकेला नहीं था। "पहले आम लोगों में वर्षा-वन के प्रश्न को लेकर शायद ही कोई चर्चा होती थी," मेंडेस ने कहा। "हम अकेले ही यह लड़ाई लड़ रहे थे।" लेकिन अब विश्व भर से लोग उनके इस संघर्ष में मेंडेस और उसके साथी रबर टैपरों के साथ जुड़ रहे थे।

जून १९८८ में सापुरी में सेरिंगल कछोईरा, जहाँ मेंडेस का बचपन बीता था, को सबसे पहला सुरक्षित संग्रह क्षेत्र घोषित किया गया। फिर बाद में उसी वर्ष तीन और क्षेत्रों को भी सुरक्षित क्षेत्र बनाया गया। आख़िरकार वर्ष-वन को बचाने की मुहिम अब प्रगति कर रही थी।

"मुझे अपने अंतिम संस्कार के समय फूल न चढ़ाये जाएँ,

क्योंकि मुझे पता है कि वे ज़रूर जंगल से तोड़े गए होंगे।"

अध्याय ७ : संघर्ष जारी है

"चीको मेंडेस क्रिसमस तक जीवित नहीं बचेगा।"

दिसंबर १९८८ में ये शब्द दबी आवाज़ में आक्रे में चारों ओर सुनाई दे रहे थे। मेंडेस ने खुद भी ऐसा सुना था। उसे डर था कि शायद जल्दी ही उसकी हत्या कर दी जाएगी।

सुरक्षित संग्रह क्षेत्रों की सफलता के साथ ही श्रमिक संघ के सदस्यों के विरुद्ध धमकियों और हिंसा की घटनाएं बढ़ गई थीं। १९८० के दशक के अंत में एक हज़ार से भी अधिक श्रमिक संघ के सदस्यों और रबर टैपरों की हत्याएं हुई थीं।

चीको मेंडेस मरना नहीं चाहता था। "यदि आकाश के कोई फरिश्ता नीचे आयें और इस बात की गारंटी दें कि मेरी मृत्यु से श्रमिक आंदोलन और मज़बूत हो जायेगा, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी," मेंडेस ने अपनी मृत्यु से कुछ ही समय पहले एक पत्र में ऐसा लिखा था। "लेकिन अनुभव हमें ठीक इसका विपरीत बताता है," उसने कहा। "भव्य अंतिम संस्कारों और बड़े-बड़े जुलूसों के द्वारा हम वर्षा-वन को नहीं बचा सकते। मैं जीना चाहता हूँ।"

चीको के लिए उसका परिवार, जिसमे अब उसका दो साल का बेटा सैंडीनो भी शामिल था, अत्यंत महत्वपूर्ण था। वह नहीं चाहता था कि उसकी पत्नी और बच्चों को कोई दुःख झेलना पड़े। वह नहीं चाहता था कि वे बेसहारा हो जाएँ।
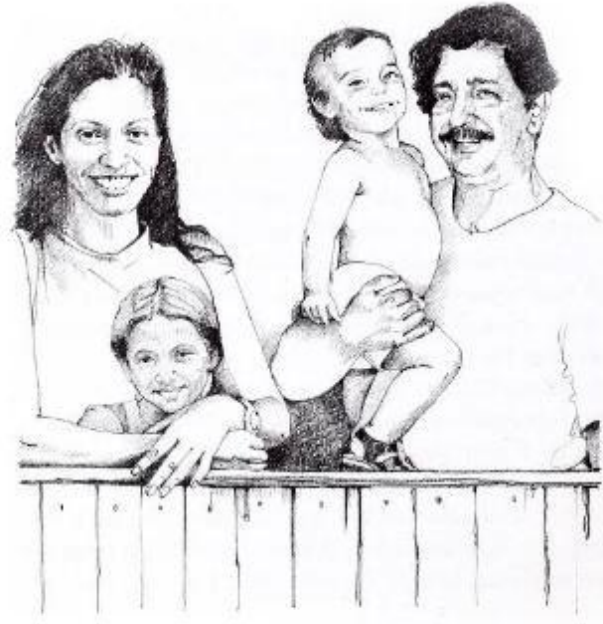
लेकिन फिर भी उसे लगा कि वह इस संघर्ष को छोड़ नहीं सकता। "हम इस लड़ाई से भाग नहीं सकते," मेंडेस ने ज़ोर दे कर कहा। "हमें संघर्ष जारी रखना होगा। हम अपने साथियों की हत्याएं जारी नहीं रहने दे सकते।"

चीको मेंडेस की हत्या की छह बार कोशिशें हुईं, लेकिन वह बच गया। वह जहाँ भी जाता, उसे अंगरक्षक साथ रखने पड़ते थे। २० दिसंबर को मेंडेस ने गहरे जंगल में बसे शहर सेना मदुरेइरा की यात्रा की, जहाँ उसने ४०० से भी अधिक टैपरों को श्रमिक संघ में शामिल किया। हालाँकि उसके मित्रों ने उसे सापुरी से दूर रहने को आगाह किया था, मेंडेस अपने घर लौटने के लिए दृढ था। वह क्रिसमस का पर्व अपने परिवार के साथ मनाना चाहता था।

२२ दिसंबर १९८८ की शाम, मेंडेस ने सापुरी में अपने घर पर अपने अंगरक्षकों के साथ पांसे का खेल समाप्त ही किया था। भोजन से पहले उसने स्नान करने का निश्चय किया। स्नानगृह उसके घर से अलग एक दूसरी इमारत में था।

उसके घर के पीछे, जंगल की घनी झाड़ियों में छुपे उसके हत्यारे मेंडेस की प्रतीक्षा कर रहे थे।

मेंडेस पिछले दरवाज़े से बाहर निकला। जब उसने अँधेरे में टॉर्च जलाई, मानो उसने स्वयं को हत्यारों के हवाले कर दिया। अचानक, अँधेरे में से गोलियों की एक बौछार उसके ऊपर बरस पड़ी। मेंडेस लड़खड़ाता हुआ वापस घर में घुसा।

और कुछ क्षणों में ही उसकी मृत्यु हो गई।

चीको मेंडेस के निधन का समाचार विश्व भर के समाचार पत्रों में मुखपृष्ठ पर छपा। उसके अंतिम संस्कार में एक हज़ार से भी अधिक लोग शामिल हुए।

मूसलाधार बरसात में भीगते वे निःशब्द चलते हुए चर्च तक गए। उनमें से एक लकड़ी के क्रॉस पर लगे मेंडेस के एक विशाल छायाचित्र को उठा कर चल रहा था। राजनेता, फिल्मकार, एक्टर, पत्रकार, वैज्ञानिक और पर्यावरणविद भी रबर टैपरों के साथ उनके आक्रोश और दुःख में शामिल हुए।

यह वे लोग थे जिन्हें मेंडेस ने वन को बचाने के अपने संघर्ष के लिए संगठित किया था।

"मुझे अपने अंतिम संस्कार के समय फूल न चढ़ाये जाएँ," चीको मेंडेस ने एक बार कहा था, "क्योंकि मुझे पता है कि वे ज़रूर जंगल से तोड़े गए होंगे।"

लेकिन आज के इस एक अवसर पर मेंडेस के मित्रों ने उसकी इच्छा की परवाह नहीं की। उसकी समाधि पर सुन्दर ताज़े फूल चढ़ाये गए।

२६ दिसंबर १९८८ को एक मवेशी फार्म-मालिक के बेटे, डार्सी अल्वेस परेरा ने मेंडेस की हत्या का जुर्म स्वीकार किया। दिसंबर १९९० में सापुरी का न्यायलय २०० से भी अधिक लोगों से खचाखच भरा हुआ था, उस मुक़दमे को सुनने के लिए, जिसे ब्राज़ील के अखबारों ने उस सदी का सबसे बड़ा मुकदमा करार दिया था। २२ वर्ष का परेरा और उसका पिता डार्ली अल्वेस डा सिल्वा, दोनों को चीको मेंडेस की हत्या का दोषी घोषित किया गया। दोनों को १९ वर्ष की कैद की सजा सुनाई गई।

चीको मेंडेस का जीवन और उसकी मृत्यु, दोनों ही वर्षा-वन और उसके लोगों, बल्कि पूरी पृथ्वी के संरक्षण के लिए समर्पित थीं। मेंडेस ने ज़ोर दे कर कहा था, "अमज़ोनिया का विनाश हम किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करेंगे। अमेज़न की बर्बादी जंगल के लोगों के लिए ही नहीं, पूरी धरती के लिए खतरा उत्पन्न करती है।"

मेंडेस के मित्रों और अनुयायियों को उसके निधन से बहुत धक्का पहुँचा था। लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। उन्हें विश्वास था कि बन्दूक की एक गोली वर्षा-वन के लिए चीको के संघर्ष को हरगिज़ नहीं रोक सकती।

मार्च १९८९ में २०० रबर टैपर और रेड इंडियन उस सम्मलेन में एकत्र हुए जिसकी योजना चीको मेंडेस ने बनाई थी। यह वन-निवासियों के संघ (Alliance of the People of the Forest) का पहला सम्मलेन था। चीको के चचेरे भाई सेबस्तिआओ ने सम्मलेन को सम्बोधित किया: "हमारे साथी की हत्या करके शायद उन्होंने सोचा होगा कि वे हमारे आंदोलन को समाप्त कर देंगे। लेकिन वे गलत सोचते हैं। आज यहाँ हम अपने उस साथी के संघर्ष के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की घोषणा करते हैं।"

मार्च १९८९ के सम्मलेन में एक "वन-वासियों का घोषणा-पत्र" जारी किया गया। इसमें लिखा था:

"वन के निवासी चाहते हैं कि उनके क्षेत्र सुरक्षित रहें। यह संगठन इस अति-विशाल परन्तु नाज़ुक जीवन-तंत्र, जो कि हमारी सम्पदा का स्रोत और हमारी संस्कृति का आधार है, की रक्षा के लिए सारे प्रयासों को अपनाएगा।"

यह चीको मेंडेस के कारण ही है, कि आज विश्व भर में लोग वर्षा-वनों के संरक्षण के लिए कार्य कर रहे हैं। वर्षा-वनों और उनके इकोसिस्टम के बारे में लिखे गए लेख और पुस्तकें लोगों को दीर्घकालीन खेती के महत्व के बारे में शिक्षा दे रही हैं। बहुत से लोगों ने वर्षा-वनों के पेड़ों से बनी वस्तुएं ख़रीदना, या वर्षा-वन में पाले गए पशुओं का मांस खाना बंद कर दिया है, और इस प्रकार वे मेंडेस के कार्य को समर्थन दे रहे हैं।

उसके अंतिम संस्कार के समय चीको के एक मित्र ने उसके सभी समर्थकों की ओर से कहा था: "चीको अभी भी जीवित है, उन सभी कार्यों में जो उसने किये, और उन सिद्धांतों में जिनका उसने प्रतिनिधित्व किया। इस संघर्ष को जारी रखने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं।" जहाँ कहीं भी लोग इस पृथ्वी की प्रचुर सम्पदा और विविधता की सुरक्षा के लिए संघर्ष कर रहे है, यह प्रतिबद्धता आज भी कायम है।

समाप्त